तपागच्छ संविग्न शाखाप्रणी रैवताचलादितीर्थोद्धारक सुविहित आचार्य श्री विजयनीति हर्षेस्रीरवर सद्गुरुभ्यो नमः

and a contract of the contract

सूत्र अने ग्रंथना पुरावा सहित पर्वातिथि क्षयदृद्धि प्रश्लोत्तर विचार तथा मुहपति बंधन निबंध

当

ः देखकः

पू. आचार्य श्री विजयमहेन्द्रमूरीश्वरजी महाराज

ं द्रव्य सहायकः मारवाड तखतगढ निवासी दोठ देवीचन्द्रजी पन्नाजी ओसवाछ



ः प्रकाशकः शेठ चीतुमाई त्रिकमलाल श्रराफ ढालनीपोळ - अद्यमदाबादः

वीर संवत-१४८८

इ. स. १९६२

विकाम संवत २०१८

For Private & Personal Use

तपागच्छ संविग्न शास्ताप्रणी रैवताचलादितीर्थोद्धारक सुविहित आचार्य श्री विजयनीति हर्षस्तीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः

मूत्र अने ग्रंथना पुरावा सहित पर्वतिथि क्षयदृद्धि प्रश्लोत्तर विचार तथा मुह्तपत्ति बंधन निबंध

: छेखक :

पू. आचार्य श्री विजयमहेन्द्रमूरीश्वरजी महाराज

: द्रव्य सहायकः

मारवाड तखतगढ निवासी शेठ देवीचन्दजी पन्नाजी ओसवाल

: प्रकाशक :

शेठ चीतुभाई त्रिकमलाल श्रराफ बालनीपोळ - अहमदाबाद.

वीर संवत-२४८८

इ. स. १९६२

विक्रम संवत २०१८



शा. देवीचन्दजी पन्नालालजी तखतगढवाला

# त्रखतगढ निवासी श्रीमान् शेठश्री पन्नालालजी घीराजीतुं ढुंक जीवन—चरित्र

जोधपुर स्टेटमां आवेलुं तखतगढ शहेर घणा समययी कैनोनी जाहाजलाली माटे प्रसिद्ध छे. आ शहेरमां ओसवाल क्वातिय अने जैनधर्म प्रत्ये पूर्ण श्रद्धालु शेठ धोराजीने पति-परायण इंदुमती नामे भद्रक परिणामी धर्मपत्नी हता. तेमनी कुले शेठ धीराजीने अचलाजी, पन्नालालजी, ओकवंदजो अने केसरिमलजी नामे चार सुपुत्रो थया. ए चार भाईओमां अजोड संप हतो, ते साथे भाग्यनो सितारो खोलतां लक्ष्मी-देवीनी प्रसन्नता थई. लक्ष्मीनी वृद्धि थवा साथे शेठ पन्नालालजी त्था तथा तेमना भाईओनं चित्त पुण्यकार्य तरक दोरायुं. कह्यु छे के—

अधः क्षिपन्ति क्रुपणा, वित्तं तत्र यियासवः। सन्तश्र गुरु चैह्यादी, तदुच्चैः फल कांक्षिणः॥

अर्थः-"कंजुस पुरुषो जाणे नीचे-नीचे गतिमां जनानी इच्छावाला होय तेम धनने नीचे-भूमिमां दाटे छे, अने सत्पुरुषो तो उंचा फळनी उंची गतिनी इच्छावाला होवाथी गुरुमहाराज तथा चैत्यदेशसर विगेरे पुण्यकार्यमां धनने वापरे छे."

पूर्व जन्मना पुण्योदियथी छक्ष्मी मछे छे, परन्तु ए मळेडी छक्ष्मीने सत्कार्यमां उपयोग करत्रो ए भावि सद्गतिनी निशानी

छे. तखतगढमां अयणी गणाता आ कुटुम्बना होठ पनाखाळजी तथा तेमना त्रणे भाईओए पोताने मळेळी ढक्मीनो सद्व्यय कर्यो, अनेक धार्मिक कार्यों करवा उपरांत सवाथी दोढ लाखना मोटा खरचे तखतगढमां आलेशान देरासर वन्धाव्युं. देरासरजीतं खात मुहूर्त स्ंवत् १९७३ ना महा सुर-१३ ना रोज कर्युँ हतुं. संवत् १९८०ना वैशाख सुदी-११ना रोज प्रतिष्ठानुं **शुभ मु**हूर्त आब्युं. आ महान प्रसंगे आसरे वीसथी पच्चीस हजार मनुष्यो एकठा थया हता. अठ्ठाइ महोत्सव, वरघोडा तथा साधर्मिक वात्सलय विगेरे सारी रीते थया हता. संवत १९८०ना वैसाख सुद-१२ना रोज चार शुभ योगो मळतां पंम्यासजी श्री कल्याण विजयजी महाराज तथा मुनिराज श्री सौभाग्य विजयजी महाराजना हस्ते शुभ मुहूर्ते घणाज ठाठ-माठथी प्रतिष्टा थई हती. प्रतिष्टाना शुभ प्रसंगे शेठ पन्ना-**ळाळ**जी तथा तेमना बन्दुओए उल्लासपूर्वंक आसरे त्रीस हजार रुपियानो सद्व्यय कर्यो हतो. तेमणे देशसरजीमां भावपूर्वक मूलनायक श्री. रुषभदेव भगवान अने बन्ने बाजुए श्री पार्श्वनाथ स्वामी तथा श्री शांतिनाथ प्रभुना भव्य प्रतिमाजी बधराज्या. मुख्य देरासरजीती बन्ने बाजुए करावेली बे देरीओमां बाछ ब्रह्मचारी श्री नेमिनाथ स्वामी तथा वर्तमान शासनपति श्री महावीर स्वामीनी मनोहर प्रतिमाजीनी प्रतिष्टा करावी. देरासरजीना कंपाउन्डमां एक भागमां घटादार सुन्दर रायण वृक्ष नीचे श्री दादाजीनी पादुका स्थापन करावी, जेनुं दर्शन करतां खरेखर तीर्थाघिराज श्री शत्रुजय उपरनी नीलुडी रायण अने तेनी नीचे बीराजती श्री दादाजीनी पादुकानु स्मरण थाय छे. देरासरजीमां पत्थरनी उत्तम कोरणीमां श्री सिद्धचक्रजी तथा श्रीपाल महाराज अने मयणासुन्दरीनो पट्ट एवो आबेहूब कराव्यो, के जेने देखतां अपूर्व आहळाद थाय अने उच्च भावना प्रगटे. वसी गुरुभक्ति निमित्ते एक देरी करावीने तेमां सुनि महाराज श्री केशरविजयजी महाराजनी मूर्ति पधारावी.

शेठ पन्नाळाळजीनो जन्म विक्रम संवत. १९३१ मां थयो हतो. तखतगढमां साधु-साध्वी तथा जैन भाइओने उतरवा माटे त्या सामयिक प्रतिक्रणणादि धार्मिक किया माटे जोइए तेवी सगवडवालो उपाश्रय के धर्मशाळा नहोती, तेथी ए सगवड दूर करवा माटे उदार दिल्ला शेठ पन्नालालजीए सारी धर्मः शाळा मोटा खर्चे करावी आपी, जेनो छाभ अत्यारे साधु-साध्वी तथा जैन भाईओ लई रह्या छे. तेमणे सिदाचलजीनो बार गाउनो संघ काढ्यो हतो, जेमां सेकडो यात्राळुओए लाभ छीघो हतो. शेठ पन्नाछ। छजी दर वरसे कोईने कोई तीर्थनी यात्रा करता. साधर्भिक वात्सल्य, साध्-साध्वीनी सेवाभक्ति, त्था साधर्मिक भाईओने सहाय करवी, परमात्मानी पूजा करवी, विगेरे शाशन हितनां त्या आत्म कल्याणनां सत्कार्यी ए एमनो मुख्य व्यवसाय हतो. शेठ पन्नाळाळजीनां धर्मपत्नी बाई मगनीनी कुले देवीचन्दजी नामना एक पुत्र अने सकुदेन एक पुत्री थया. सकुवेन घणाज धर्मिष्ट छे, तेओ हालमां विधवा थयेल छे. शेठ पन्नालालजीना धर्मपत्नी बाई मगनी सं. १९८६ ना भादरवा सुदि बीजना रोज स्वर्गवासी थया, अने शेठ पन्नालालजी सं. २००२ ना महा वदी नोमना रोज<sup>ः</sup> स्वर्गवासी थया.

शेठ पन्ताछ। छजीना सुपुत्र शेठ देवी चन्द्रजो पण पोताना पिताजीने पगले चाली हर्दमीनो सद्व्यय करी रह्या छे. तेओ तखतगढना श्रो संत्रमां आगेवान छे. सुगत्र दान, पूजा, सामायिक अने प्रतिक्रमणादि धार्मिक कार्यो निरन्तर करे छे. देवगुरु अने धम ए तस्त्रत्रयी प्रत्ये अविद्रुड श्रद्धालु छे. बेंग होरमां तेमनी दुकान सुप्रसिद्ध छे, अने बेंग होरना श्रो संघमां पण सारी प्रतिष्टा धरावे हे.

शेठ देवीचंदजीने सरदारमळ, रुपवन्द, चन्द्रनमळ, मोहनळाळ ए चार सुपुत्रो छे, अने चंगाळाळ, झवेरचन्द्र, उत्तमचन्द्र ए त्रण सरदारमळना पुत्रो छे. बेटा पेळा पन्नाजी धीराजी ओसवाळ अने जडावबेन नामें पुत्री छे. भाई सरदारमळ अने मोहनळाळ उगती वयना होवा छतां पोताना विडिशे पेठे धार्मिक संस्कारवाळा छे. आपणे आशा रास्त्रीए के शेठ देवीचंदजी तथा तेमना चारे सुपुत्रो पाताना वडवा- ओने पगळे चाळी जैन शाशननी प्रभावना विशेष करे.

शेठ श्री देवीचन्द्जीए आ वर्तमानकारुमां अति उपयोगी
पुस्तक छपाववामां रुपिया ३२५ नी मदद करी पोतानी झान
भक्ति पदर्शित करी छे. ते बदल तेमने धन्यबाद घटे छे अने
बीजा सद्गृहस्थोने तेमनुं अनुकरण करी मळेळी छक्ष्मीनो
असद्व्यय करवा सूचवीए छीए.

## सूत्र अने ग्रन्थना प्रमाणयुक्त पर्वतिथिक्षयवृद्धिप्रक्षोत्तरविचार

प्रश्न १—जैनागममां तिथिनी उत्पत्ति कोनाथी मानेछ छे अने तेनुं प्रमाण केटछुं ?

उत्तर—सूर्यप्रज्ञप्ति उपांगसूत्रटीका अने च्योतिष-करंडक पयन्नास्त्रनी अंदर तिथिनी उत्पत्ति चंद्रथी कहेल छे अने तेनुं प्रमाण ५९ घडी अने एक मुहूर्तना है है भाग जेटलुं ज उत्कृष्ट तिथिनुं प्रमाण कहेल छे, तेथी एक तिथि बे सूर्योदयने स्पर्शी शकती नथी एटलेज जैनो तिथिनी वृद्धि मानता नथी. जुओ सूर्यप्रज्ञाप्तिटीका, पत्र १४९.

अहोरात्रस्य द्वापिटभागमित्रभक्तस्य ये एकःषष्टिभागा-स्तानत्त्रमाणाः तिथिरिति, अथाहोरात्रस्त्रिशनमुहूर्त्तपमाणः सुप्रतीतः । तिथिस्तु किं सुहूर्त्तपमाणिति ? उच्यते, परिपूर्णा एकोनित्रंशनसहूर्ता एकस्य च सुहूर्तस्य द्वात्रिशत् द्वापष्टिभागाः ।

अर्थ—एक अहोरात्रिना बासठ भाग करीए, तेमांथी एकसठ भाग जेटली तिथि होय छे अने अहोरात्र तो त्रीश मुहूर्त प्रमाण छे परंतु तिथिनुं प्रमाण केटलुं १ तिथिनुं प्रमाण संपूर्ण २९ मुहूर्त अने एक मुहूर्तना बासठीया बत्रीश भाग उपर जाणवा.

जुओ ज्यतिषकरंडक सूत्रनो पाठ पत्र ६२.

यात्रमुहूर्त्तप्रमाणा तिथिस्तावत्ममाणा तां प्रतिपादयन्ति अउणत्तीसं पुणा उ मुहुत्ता सोमतो तिही होह ॥ भागा य उ वत्तासं वाविहिक्षण छेएणं ॥गाथा१०५॥ टीका-सोमतः चन्द्रमस उपजायते तिथिः, सा च तत उपजायमाना एकोन-त्रिशत् परिश्लीमुहूर्ता एकस्य च मुहूर्तस्य द्वापिटकृते न छेदेन प्रविभक्तस्य सत्का द्वात्रिशत् भागाः तथाहि—अहोरात्रस्य द्वापिटआर्थाकृतस्य सत्का ये एकपिटमागास्तावत्प्रमाणा तिथित्यकुत्तम् ॥

भ अर्थ — चंद्रनी गतिथी तिथि उत्पन्न थाय छे. ते उत्पन्न थती तिथि संपूर्ण २९ मुहूर्त अने एक मुहूर्तना बासठीय बत्रीश भाग जेटलीज होय छे, एटलुंज सूत्रमां तिथिनुं प्रमाण कहेलुं छे तेथी तिथिनी इद्धि थई शके नहि.

प्रश्न २ — छौकिक वेदांग ज्योतिषमां तिथिनुं प्रमाण पेटलुं?

उत्तर वेदांग ज्योतिषमां तिथितुं माप चंद्रनी गति उपर आधार राखतुं होवाधी कोइक वार चोपन घडीतुं अने कोइ वार छासठ घडीतुं होय छे, तेशी ते तिथि वे सूर्योदयन स्पर्शी शके छे तेथी लौकिक पंचांगमां तिथिनी घृद्धि आवे छे.

> प्रश्न ३—जैन सिद्धान्त प्रमाणे तिथिनो क्षय आवे छे ? उत्तर—सूर्यप्रज्ञप्ति, ज्योतिषकरंडक सूत्रानुसार तिथिनुं

प्रमाण अहोरात्र करतां थोडुं होवाथी वे महिने एक तिथिनो क्षय आवे छे. जुओ सूर्यप्रज्ञन्ति सूत्र टीका, पत्र २१७.

यत एकैकस्मित् दिवसे एकैको द्वाष्टिभागोऽमराव-स्य सम्बन्धी प्राप्यते ततो द्वाष्टिचा दिवसैरेकोऽवम(क्षय) रात्रौ भवति, किम्रुक्तं भवति ?—दिवसे दिवसे अवमरात्र-सत्केकद्वाष्टिभागदृद्धचा द्वाष्टितमो भागः सङ्घायमानो द्वाष्टितमदिवसे मूलत एव त्रिष्टितमा तिथिः पवर्त्तते इति एवं च सति य एकप्टितमोऽहोरात्रस्तस्मिन्नेकष्टितमा द्वाषितमा च तिथिर्निधनमुपगतेति द्वाष्टितमा तिथिलेंकि पतितेति व्यवद्वियते ॥

भावार्थ--एकैक दिवसे एक एक वासठमो भाग क्षय रात्रिसंबंधी प्राप्त थाय छे, तेथी बासठ दिवसे एक क्षयरात्रि थाय छे कहेवानी मतलब ए छे के-दिवसे दिवसे क्षयरात्रि संबंधी एक एक बासठीया भागनी वृद्धिवडे बासठमो भाग उत्पन्न थतां बासठमा दिवसे मूळथी ज त्रेसठमी तिथि प्रवर्ते छे, ए प्रमाणे छते एकसठमो जे दिवस तेमां एकसठमी अने बासठमी तिथिओ पूरी थाय तेथी बासठमी तिथि होकमां क्षय पामेली कहेवाय छे.

यतः उक्तं तत्रैव पत्रे एक्कंमि अहोरत्तं दोति तिही जत्य निहणमेज्जासु सोत्थ तिही परिहायह ॥ अर्थ—कह्युं छे के-एक ज दिवसमां बन्ने तिथिओ पूरी थाय तो ते बीजी तिथि क्षय पामे छे.

प्रश्न ४— जैन सिद्धान्तानुसार ज्योतिषना गणित प्रमाणे पर्वतिथिनो पण क्षय आवे छे अने हौकिक पंचांगमां तो पर्वतिथिनी क्षय-वृद्धि बन्ने आवे छे ते मनाय के नहि?

उत्तर—जैन सिद्धान्त प्रमाणे पर्वतिथिनो पण क्षय आवे छे अने छौकिक पंचांगमां तो क्षयवृद्धि बन्ने आवे छे, परंतु भगवतीसूत्रमां अष्टमी, चतुर्देशी, अमावास्या अने पूर्णिमाने प्रधान पर्वतिथिओ कहेडी छे. जुओ भगवती सूत्रनो पाठ, श, २, उ. ५. पत्र १३४.

बहु हिं सीलव्ययगण वेरमणप च्यव्याणपोसहो वया से हिं, चाउदसहमुद्दिष्ठपुण्णमासिणीस पिंडपुरनं पोसहं सम्मं अणु-पालेमाणे, टीका - 'वहू हिं' इत्यादि शीलव्रतानि अणु-व्रतानि गुणा - गुणव्रतानि विरमणानि - औचित्येन रागादि निष्ठत्तयः प्रत्याख्यानानि पौरूष्यादीनि पौषधं - पर्वदिनानुष्ठानं तत्रोपवासः - अवस्थानं पौषधोपवासः, पौषधं च यदा यथा-विधं च ते कुर्वन्तो विहरन्ति तद्दर्शयन्नाह - 'चाउद्दसे' त्यादि इहोदिष्टा - अमावस्या 'पिंडपुन्नं पोसहं'ति आहारादिभेदात् चतुर्विधमपि सर्वतः ॥

भावार्थ--तुंगिया नगरीने विषे ऋद्धिमान् घणा श्रावको वसे छे. तेओ अणुत्रत, गुणत्रत, चचिततावडे रागादिकनो त्याग पौरुषी आदि पच्चलाण अने पर्वना दिवसे करवा योग्य अनुष्ठानवडे अष्टमी, चतुर्दशी अमावास्या अने पूर्णिमाना दिवसे सर्वथी आहार-शरीर सत्कार-ब्रह्मचर्य -अव्यापाररूप चारे प्रकारना पौषधनुं सम्यक् प्रकारे पालन करतां विचरे छे. ' आ चारित्रितिथिओ कहेवाय छे. उपरोक्त तिथिओना दिवसे श्रावकोने पौषधव्रत करवानुं कह्युं छे, अने साधुओ तो चारित्रवंत छे तेथी तप करवानुं कह्युं छे. प्रतिथिओना दिवसे तप न करे तो व्यवहारभाष्यमां प्रायिश्वत कहेलुं छे. जुओ व्यवहारभाष्य टीकानो पाठ-

अष्टम्यां पाक्षिके चतुर्थं न करोति तदा मासलघु (पुरि-महुं) मासगुरु (एकाशनकं) चातुर्मासके सांवत्सरिके षष्ठ अष्टमं न करोति तदा चातुर्मासलघु (आचाम्लं) चातुर्मास गुरु (उपवासं) पायिक्चतं ॥

अर्थ — आठम अने चौद्दो उपवास न करे तो पुरिमुहु अने एकासणानुं प्रायिश्वत्त आवे अने चडमासी तथा संवच्छरीनो छट्ठ अट्टम न करे तो चार छचुमास अने चार गुरुमासनुं प्राययिश्वत्त आवे. तपागच्छनी बृहत्समाचारीमां पर्वतिथिनी क्षय के वृद्धि मानवानो स्पष्ट निषेध करें छे. जुओ ते पाठ—

अद्वमी चाउदसी उदिहा पुण्णिमाइस्र ।। पन्त्रतिहिस्र खयबुद्धि न हवइ इइ वयणा उ ॥ १ ॥ अर्थ—आठम, चौद्श, अमावास्या अने पूर्णिमा आ पर्वतिथिओने विषे क्षय के युद्धि धाय नहि.

पर्वतिथिनो क्षय आवे तो पूर्वनी अपर्वतिथिनो क्षय करवो. जुओ ते पाठ---

जइ पञ्चतिहिखाओं तह कायञ्चो पुञ्चतिहिए। एवमाग-मवयणं कहियं तेव्छक्तनाहेहिं॥ १॥ बीया पंचमी अहमी एकारसी चाउइसी य ॥ तासं खओ पुञ्चतिहिओ अमाव-साए वि तेरस ॥ २॥

अर्थ — जो पंचांगमां पर्वतिथिनो क्षय होय तो तेना पूर्वनी अपर्वतिथिनो क्षय करवी एम त्रेहोक्यनाथ कथित आगम बचन छे. बीज, पांचम, आठम, चौदश ए तिथिओनो क्षय होय तो तेना पूर्वनी तिथिनो क्षय थाय अने अमावास्थानो क्षय होय तो तेरसनो क्षय करवो. बीजुं वाचकवर्य उमास्वाति महाराजनो प्रघोष क्षये पूर्वी तिथिः कार्या वृद्धौ कार्या तथोत्तरा पण क्षय वृद्धि मानवानो निषेध करे छे, उपरोक्त पाठो उपरथी एम सिद्ध थाय छे के-पर्वतिथिनी क्षय के वृद्धि मानी शकाय नहि.

प्रभ ५-होकिक पंचांगमां पर्व के पर्वानन्तर पर्व (चौदश पछी अमावास्या के पूर्णिमा आवे ते) तिथिनी क्षय के वृद्धि आवे तो कई तिथिने पर्वतिथि कहेवी अने मानवी ?

उत्तर-श्राद्धविधियंथमां पर्व कृत्यना अधिकारमां आचार्यश्रो रत्नशेखरस्रीश्वरजी महःराज वाचकवर्य उमास्वाति महाराजना प्रघोषनो पाठ क्ष्ये पूर्व तिथिः कार्या युद्धौ कार्या तथोत्तरा आपीने जणावे छे के न्होंकिक पंचांगमां पर्वतिथिनो क्षय आवे तो तेनी पूर्वतिथिमां क्षय पामेळ पर्वतिथि स्थापीने तेनी आराधना करवी. जेमके पंचांगमां अष्टमीनो क्षय आवे तो औंदायिक सातमे आठम स्थापीने अष्टमीनी आराधना करवी अर्थात् सातमनो क्षय करो ते आराध्य तिथिने आठम कहेवी अने मानवी.

पंचांगमां पर्वतिथिनी वृद्धि आवे तो उत्तरा एटछे बीजी तिथिने पर्वतिथि कहेवी अने आराधवी, जुओ कल्प-सूत्र समाचारी टीकानो पाठ.

यथा चतुर्दशीरुद्धौ पथमा चतुर्दशीमवगणय्य द्वितीयायां चतुर्दश्यां पाक्षिककृत्यं क्रियते ॥

कल्पसूत्र सुबोधिका टीका, पत्रांक २०६. अर्थ-पंचांगमां बे चतुर्दशी आवे तो पहेली चौदशनी अवगणना करीनेज बीजी चतुर्दशीए पाक्षिक छत्य कराय छे. आ पाठमां टीकाकारे प्रथम चतुर्दशीने माटे अवगणच्य संबन्धकभूतछदंत मूकेछ छे ते खास अर्थस् वक छे. 'अवगणच्य' शब्दनो अर्थ शब्द-केषमां 'अपमान-अवज्ञा-तिरस्कार-पराभव' अर्थ करेछ छे एटछे प्रथम चतुर्दशीने चौदश न कहेवी, पण अपर्वतिथि तरीके बीजी तेरस कहेवी अने मानवी एम अर्थापत्तिन्यायथी सिद्ध थाय छे. जो टीप्पणानी पहेली चौदशने छोकोत्तर हष्टिए चौदश कहेवाती होय तो टीकाकार महाराजा चपाव्याय श्री विनयविजयजी गणिवर्य प्रथम चतुर्दशीने माटे परित्यक्य के

त्यक्त्वा शब्द छोडीने अवगणय्य शब्द न वापरत. ए प्रमाणे बीजी पर्वतिथिओनी वृद्धिने माटे पण समज्जुं.

आ उपरथी एम सिद्ध थाय छे के-भीतीया जन पंचा गोमां आठमना क्षये सातमनो क्षय अने चौदशनी वृद्धिए वे तेरस स्ववामां आवे छे ते सूत्र अने परंपरासिद्ध छे एम समजवुं

प्रश्न ६-श्राद्विधि ग्रंथमां आपेल वाचक उमास्वाति महाराजना प्रघोषना वन्ने चरण शुं तेमना रचेल छे ?

उत्तर-आ प्रघोषमां कार्यापद वे वार आवे छे तेथी
प्रैंघोषना बंने चरणने एक ज कर्ताना मानीए तो पुनरुक्ति
दोष आवे छे. उमास्त्राति महाराजे तत्तार्थ स्त्रनी रचना
करी छे तेमां कोई सूत्रनी अंदर पुनरुक्ति दोष देखातो नथी
अने आवा सामान्य वे चरणमां पुनरुक्ति दोष मूके ए
वात असंभवित छागे छे, तेथी अमारू एम मानवुं छे
के-क्षये पूर्वा तिथिः कार्या आ प्रथम चरण तो उमास्वाति
महाराजनुं ज रचेछ छे; बीजा चरणने भाटे संशय छे
ते चरण सैद्धान्तिक टिप्पणना अभावे पाछछथी छौकिक
पंचांगमां आवती वृद्धि तिथिनी व्यवस्था माटे पूर्वाचार्य
रचेछ छागे छे. आ प्रघोष पूर्वपरंपराथी आवेछ होईने
पूर्वाचार्योए मानेछ छे अने अमे पण मानीए छीए.

प्रश्न ७-सेद्धान्तिक टिप्पणनो अभाव कयारथी थएछ मानो हो ? उत्तर—उमास्वाति महाराजना समयमां तो जैन टिप्पण होवुं ज जोईए, केमके तेओ पूर्वधर हता, तेमने माटे प्रथान्तरमां वाचकाः पूर्विवदः विशेषण आपेळ छे तेमना शिष्य श्यामाचार्य महाराजे प्रज्ञापनासूत्रनी रचना करेळ छे अने दश पूर्वधरनुं रचेळ होय तेज सूत्रहपे मनाय छे, तो दश पूर्वधरना समयमां सेद्धन्तिक टिप्पण न होय ए वात मानी शकाय एवी नथी. १४मी सदीमां थएळ जिनप्रभसूरिजीना पहेळाथी ज सेद्धान्तिक टिप्पणनो अभाव थयो होय एम अमाह मानवुं छे.

प्रश्न ८ - छौकिक पंचांगमां चतुर्दशी पर्वानन्तर अमा-बारया के पूर्णिमानो क्षय आवे तो ते पर्वनी आराधना केवी रीते करवी ?

## पूर्णिमा के अमःवास्याना क्षयमां तेरहानो क्षय

चत्तर—होिकिक पंचांगमां अमावास्या के पूर्णिमाना पर्व-तिथिनो क्षय आवे तो क्षये पूर्वा तिथिः कार्या ए प्रवोषने अनुस्रारे पंचांगनी त्रयोदशीए होकोत्तर औदयिक चतुर्दशी स्थापीने पाक्षिक कृत्य करवुं अने होिकिक चतुर्दशीए क्षय पामेळ अमावास्या के पूर्णिमाने स्थापीने ते पर्वनी आराधना करवी. हीरप्रश्न यंथ पण उपरोक्त कथननुं समर्थन करे हो. जुओ हीरप्रश्न पत्रांक ३२

पंचमी तिथिसुटिता भवति तदा तत्तपः कस्यां तिथौ क्रियते, पूर्णिमायां च त्रुटितायां क्रुत्र इति प्रश्न अत्रोत्तरं पंचमी तिथिस्त्रुटिता भवति तदा तत्तपः पूर्वस्यां तिथौ कियते पूर्णिमायां च त्रुटितायां त्रयोदशीचतुर्दश्योः कियते, त्रयोदश्यां विस्मृतौ तु प्रतिपद्यपीति ॥

अर्थ-ज्यारे पंचमीनो क्षय होय त्यारे ते पंचमी तिथिनो तप सौकिक पंचांगनी कई तिथिए अने पूर्णिमानो क्षय होय त्यारे ते तप कई तिथिए करवो ? एनो उत्तर आपे छे-टिप्पणमां पंचमीनो क्षय होय त्यारे ते पंचमीनो तप पहैलानी तिथि चोथना दिवसे करवो, अने पूर्णिमानो तप तेरस चौदरो करवो, अहिं खास आचार्य श्रीए सप्तमी विभ-क्तिनुं द्विवचन बापर्युं छे ए अर्थ सूचक छे, एटळे टिप्पणानी त्रयोदशीए औदयिक चतुर्दशी स्थापीने पाक्षिक कृत्य करवुं अने चतुर्दशीए पूर्णिमा स्थापीने ते तपनी आगधना करवी एथी पूर्णिमाना क्षयमां वे तिथि फेरववानुं सूचवे छे एटले पंचांगनी पूर्णिमा अने अमावास्याना क्षयमां तेरहानी क्षय करवो ए प्रमाणे तेरहो करवानुं भूली गया होय तो पडवानो दिवसे पण पृणिमानो तप करवो. आ 'अपि ' शब्दनो अर्थ छे. जेम पांचमना क्षये ते तप चोथे करी शकाय छे, देमके चोथ अपर्वतिथि छे परन्तु पूर्णिमाना क्षये ते तप चौदशे करी, शकातो नथी, केमके भगवतीसूत्रमां चौदश अने पूर्णिमाने प्रधान पर्वतिथि मानेल तेथी ए बन्ने पर्वनी आराधना ज़ुदी ज करवी जोइए, क्षयमां भेगी थई शके नहि. जो पूर्णिमाना क्षये ते तप तेरश के प्रतिपदाए ज करवानी होय तो उत्तरमां आचार्यश्रीने एटलुं ज कहेवानी जहर हती के—
पूर्णिमानो क्षय होय तो ते तप तेरशे करवी अने तेरशे
भूली गया होय तो एकमना दिवसे पण करवो, परंतु
त्रयोदशीचतुर्दश्योः एम सप्तमी विभक्तिनुं द्विवचन वापरवानी
जहर नहोती, छतां द्विवचन मृक्युं छे ए खास अर्थसूचक
छे, पूर्णिमानी आराधना चतुर्दशीनी पछी ज होय पण पहेलां
होई शके नहि, तेथी ज तेरशनो क्षय करवो पढे छे ए
हीरप्रश्नना पाटनो फल्दितार्थं छे.

प्रश्न ९-छौकिक पंचांगमां अमावाइया के पूर्णिमानी यृद्धि होय त्यारे ते पर्वानन्तर पर्वतिथिनी आराधना केवी रीते करवी ?

### पूर्णिमा के अमावास्यानी वृद्धिए तेरशनी वृद्धि.

उत्तर—छौकिक पंचांगमां अमावास्या के पूर्णिमानी वृद्धि आवे त्यारे परंपराहढ उमास्वाति महाराजना वृद्धौ कार्या तथोत्तरा ' आ प्रघोंषने अनुसार बीजी पूर्णिमा आराधवा माटे अने सान्तर दोष टाळवा माटे परंपरा आगमने अनुसार अमावास्या के पूर्णिमानी वृद्धिए अपर्वेहप तेरहानी वृद्धि करवामां आवे छे.

रंका पूर्णिमानी वृद्धिप तेरशनी वृद्धि करवाथी पाक्षिक कृत्य पंचांगनी प्रथम पूर्णिमाए करवुं पडे अने तेम करवाथी औद्यिक चतुर्देशीनो नियम रहेतो नथी तेथी श्राद्धविधिकारे आपेड गाथाने अनुसारे आज्ञामंगनो दोष छागे तेनु देम? समाधान-आराधनामां औदायिक तिथि छेवी तेमां कोई पण जातनो मतभेद नथी. श्रादविधिमां कह्यु छे के---

"'मातःप्रत्याख्यानवेलायां या तिथिः स्यात् सा पमाणा"

प्रत्याख्यानना आरंभ वखतथी एटले सूर्योद्यथी तिथिनी हारुआत जणावे छे. पर्वतिथिनो आरंग जेम सूर्योदयथी थाय तेम ते तिथिनी समाप्ति पण बीजा सूर्योदयथी अन्य तिथिनी शरुआत थाय त्यारे ज थाय एटले श्राद्धविधिमां प्रतिशदित स्योदियनो उत्सर्ग मार्ग ते तिथिमां छागु पडे छे के जे तिथिनी अन्य सूर्योद्य वखते समाप्ति होय, परंतु पर्व 🕏 पर्वानन्तर तिथिनी पंचांगमां क्षय के वृद्धि होय त्यारे सूर्यों द्यनो उत्सर्ग मार्ग अपवादनो विषय बने छे. हीरप्रश्नमां पूर्णिमानी वृद्धिए बीजी औदयिक तिथि छैवानुं कह्युं छे ते होकिक उद्यवाळी छे, पण होकोत्तर उदयवाळी नथी तो पण आराधनानी अपेक्षाए होकोत्तर उदयवाळी मानीने तेनी काराचना करीए छीए. चतुर्दशी अने पूर्णिमा ए बन्ने प्रधान पर्वतिथि हे तेथी तेनी आराधना अनस्तर ज थाय ्सान्तर थई शके नहि. ते माटे जुओ सेनप्रश्न अने आचारमय समाचारीनो पाठ पत्र ३.

चतुष्पर्व्यो कृतसम्पूर्णचतुर्विधयौषधः पूर्वोक्तानुष्ठानपरो मासचतुष्टयं यावत् पौषधमितमां करोति द्वितीयोपवासशक्त्य भावे तु आचाम्लं निर्विकृतिकं वा करोति ॥

अर्थ-अष्टमी, चतुर्दशी, अमावास्या, पूर्णिमारुप बारपर्व ए चतुष्पर्वीमां चारे प्रकारनो संपूर्ण पौषध करनार छतो पहेली त्रण प्रतिमावहननी कियामां तत्पर एवो श्रावक चार महिना सुघी पौषध प्रतिमा करे, पाक्षिकनो उप-वास कर्या पछी बीजे दिवसे अमावास्या के पूर्णिमाए उप-वास करवानी शक्ति न होय तो आयंबिल के नीवी करे.

बीजो पाठ, सेनप्रश्न, पत्रांक १०५---

मतिमाधरश्रावकः श्राविका वा चतुर्थी मितमात आरम्य चतुष्पर्वी पौषधं करोति तदा पाक्षिकपूर्णिमा षष्ठकरणाभावे पाक्षिकपौषधं विधायोपवासं करोति पूर्णिमायां चैकावनं कृत्वा पौषधं करोति तत्शुध्यति न वा इति मश्रोऽत्रोत्तर मितमाधरः श्रावकः श्राविका वा चतुर्थीमितमात आरम्य चतुष्पर्वी पौषधं करोति तदा मुख्यवृत्या पाक्षिकपूर्णिमयो- क्चतुर्विधाहारषष्ठ एव कृतो युज्यते, कदाचिच्च यदि सर्वथा शक्तिन भवित तदा पूर्णिमायां आचाम्छं निर्विकृतिकं वा कियते एवंविधाक्षराणि समाचारीप्रज्थे सन्ति परमेकावनं शक्त हुं नास्तीति ॥

अर्थ-प्रतिमाधारी श्रावक के श्राविका चोथी प्रतिमाथी चारपर्वी पौषध करे तो पख्सी अने पूर्णिमानो छट्ट न थइ शके तो पख्खीनो पौषध करीने उपवास करे अने पूर्णिमाना दिवसे एकासणु करीने पौषध करे तो शुद्ध धाय के केम ? उत्तर-प्रतिमाधारी श्रावक के श्राविका चोथी प्रतिमाथी चार पर्वना पौषध करे तो मुख्यवृत्तिए पख्सी अने पूर्णिमानो चडविहार छट्ट ज करवो जोइए. जो कदि सर्वथा शक्ति न

होय तो परुखीना उपवास उपर पूर्णिमा (के अमावास्या) ए आयंबिल अथवा नीवी करे एवा अक्षर समाचारी ग्रंथमां छे, पण एकासणुं करवानुं शास्त्रमां दीठुं नथी. अर्थ साथे उपर आपेल समावारीप्रंथनो पाठ अने सेनः प्रश्नना पाठ उपरथी एम सिद्ध थाय छे के-चुर्द्द्शी अने अमावास्याः के पूर्णिमानी आराधना चतुर्दशीनी अनम्तर ज धनी जोइए. ज्योतिषना नियम मुजब चतुर्दशी पछी अनंतर अमावास्य के पूर्णिमानी आराधनानुं अनन्तरपणुं सिद्ध थाय छे. आचार्य श्री विजयसेनसूरीश्वरजी महाराज चतर्दशी अने पूर्णिमानी आराधनानु अनंतरपणु कायम ्राखवा माटे प्रश्नना उत्तरमां समाचारी प्रथनो पाठ आपीने ्छ्टु तप करवानी शक्तिना अभावे पाक्षिकनो उपवास करी पौषध करवानु जणावे छे. ए बन्ने पर्वनी अनन्तर आराधना माटे शक्तिना अभावे शास्त्रकारीए तपनो फेर-कार कर्यो, पण आराधनाना दिवसनो फेरफार कर्यो नथी ए खास ध्यानमां राखवा जेवुं छे तेथी समाचारीना पाठने अनुसारे छौंकिक पंचांगमां वे अमावास्या के वे पूर्णिमा आवे ्त्यारे चतुर्दशी अने अमावास्या के पूर्णिमानी अनंतर आराधना कायम राखवा माटे पूर्वाचार्योर पंचांगनी औद्-्यिक चतुर्देशीने बीजी तेरशरुप गणी पंचांगनी प्रथम पूर्णि-माना दिवसे छोकोत्तर औद्यिक चतुर्दशी स्थापीने पाश्चिक

कृत्य करवानु अने तेना बीजे दिवसे अमावास्या के पूर्णिमानी आराधना करवानुं जणावे छे तेथी ज अमावास्या
के पूर्णिमानी वृद्धिए बे तेरश करवामां आवे छे जो
अमावास्या के पूर्णिमानी वृद्धिमां पंचांगनी औदियक
चतुर्दशीए पाक्षिकनी आराधना करीए अने बोजो अमाबास्या के पूर्णिमाए ते अमावास्या के पूर्णिमा पर्वतिथिनो
आराधना करवामां अवे तो चतुर्दशी अने अमावास्या
के पूर्णिमा प्रधानपर्वतिथिनी आराधनानुं अनंतरपणु
रहेतुं नथो. पर्वतिथिनी वृद्धि मानवाशी उत्सूत्रपणानो दोष
तेमज बे पर्व कहीने एक पर्वनी आराधना करवाशी
यथावादीपणु एण रहेतुं नथी; एटला माटेज अमावास्या
के पूर्णिमानी वृद्धिमां पंचांगनी औदियक चतुर्दशीने बीजी
तेरशरूप गणी प्रथम अमावास्या के पूर्णिमाना दिवसे लोकोत्तर
औरियक चतुर्दशी स्थापीने पाक्षिक कृत्य करवामां आवे छे.

प्र० १०--पर्वतिथिनो क्षय माननार आराधना पर्वतिथिनी करे के अपर्वनी

उ०—पर्वतिथिनो क्षय माननार आराधना नियमा अपर्वनीज करे छे, पण पर्वनी निह, शास्त्रमां आराधना पर्वनी कहेल छे अपर्वनी नहीं जैनतरो पण आराधनामां पर्वतिथिनी क्षय के वृद्धि मानता नथी गोकल आठमको क्षय होय तो स्नातमना दिवसे गोकलआठम मानशे नोमना दिवसे नहीं. उमास्त्रातिनो प्रचांष पण पर्वतिथिनी क्षय के

वृद्धि मानवानो निषेध करे छे. जो आराधनामां क्षय के वृद्धि मानवानी होय तो प्रघोषनी जरुर ज रहेती नथी. क्षय होय त्यारे आराधना न करे अने वृद्धि होय त्यारे वे दिवस आराधे, क्षय मानीने आराधना करवी ए तो पोतानी माता ने वंध्या कहेवा जेवुं छे.

प्रश्न ११ — सांवत्स्तरिक पर्वनी आराधना कयारे करवी?

उत्तर-कल्पसूत्रनी समाचारीमां स्पष्ट कहुं छे के— तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसइराए मासे विइचकंते वासावासं पज्जोसवेइ तहाणं अम्हे वि वासाणं सवीसइराए मासे विइकंते वासावासं पज्जोसवेमो, अंतरावियसे कप्पइ, नो से कप्पइ तं रयणिं उवाइणा वित्तए।।

अर्थ—ते काले ते समये वर्षा ऋतुनो एक मास ने वीस रात्रि व्यतीत थये छते श्रमण भगवान् महावीर प्रभुए वर्षावास कर्यो एटले सांबत्सरिक पर्व कु तेथी अमे पण वर्षा ऋतुनो एक मास ने वीश रात्रि विती गये छते वर्षाबास करीए छीए, अने कारण होय तो ते पहेडां पान वर्षावास एटले पर्युषणा पर्व थइ शके छे पण ते पंचमीनी रात्रिनु अतिक्रमण करनुं कल्पे नहाँ.

प्रथम सेद्धान्तिक टिप्पण हतु त्यारे श्रावण वद १ थी भाद्रवा सुद् पंचमीए पचाश दिवस पूरा थता हता हाछ सेद्धान्तिक टिप्पण विच्छेद गयुं छे अने छौकिक पंचांगमां अवारनवार तिथिनी क्षय के वृद्धि आव्या करे छे तेथी आपणे क लिकस्रिजीनी परंपराथी भादरवा सुदि ४ ना दिवसे ४९ दिवस थया होय तो पण पचाश िवस पूरा थयेला मानीने ते दिवसे सांवत्सारिक पर्व करीए छीए.

प्र० १२ छौकिक पंचांगमां भादरवा सुदी पंचमीना क्षय होय तो सांवत्सरिक पर्वनी आराधना क्यारे करवी.

ड० — लौकिक पंचांगमां भाद्रपद शुक्छ पंचमीनो क्षय होय तो तपागच्छनी सामाचारी प्रमाणे चोथनो क्षय करवो जोइए पण लोगिवरुद्धचाओ ए वाक्यने ध्यानमां राखीने त्रीज चोथ भेगा गणीने संवत्सरीनी आराधना करवी.

शंका — कालिकसूरिथी भाद्रपदशुक्ल चोथ वार्षिक पर्व गणाय छे तो तेनो क्षय केम थाय ?

समाधान—तिथि वे प्रकारे होय छे एक काळितथी अने बीजी कार्यंतिथि, जे तिथि त्रणे काळमां नियत होय ते काळ तिथि कहेवाय छे अने जे तिथि तीर्थं करोना जन्म- दीक्षा केवळज्ञान के निर्वाणने आश्रिने प्रवंतेळ होय ते कार्य तिथि कहेवाय छे, बीज-पांचम-आठम विगेरे बार पर्व तिथिओ काळ तिथिओ कहेवाय छे अने आ तिथिओ पंदर कमभूमिमां नियत छे तेथी गीतार्थ आचार्यो बार पर्वतिथिनी क्षय के चुद्धिमां तेना पूर्वनी अपर्व तिथिनी क्षय के चुद्धि करे छे, पण कल्याणक के बीजा पर्वोना क्षयमां तेनी पूर्वनी तिथिनो क्षय मानता नथी. संवत्स्वरिनी

चोथ ए कालिकस्रिथो कार्यतिथि गणाय छे केमके ते दिवसे पवमीनुं कार्य कर्युं छे पण कालितिथि कहेवाय निहं, निशीयचूर्णिनी रचना कालिकस्रियी १०० वर्ष बाद महत्तर जिनदासगणिए करेल छे तेमां स्पष्ट रीते भादरवा सुदी ४ ने अपय तरांक संबोधेल छे तेथी तेनो क्षय थई शके अने निशीयचूर्णिमां पण चोथने कारणीया एवं विशेषण आपेल छे.

रंका—केटलाको एम कहे छे के औदयिक चोथ मुकीने तेनी पूर्वनी तिथिमां संवत्सरीपर्वनी आराधना केम यात्र ?

समाधान—शास्त्रानुसार सांवत्सरिक पर्वनी तिथि तो भाद्रवा सुद पांचम छे चोथ तो कारणिक छे, "अंतरावि कृप्यई" कल्पसूत्रना नवमा व्याख्याननी समाचरीना छपरना पाठने अनुसारे संबत्सरि फरे त्यारे उदयतिथिनो नियम रहेतोज नथी फक्त कालिकसूरिमहाराजे पांचमथी एक दिवस पहेला सांवत्सरिक पर्वनी आराधना करी, ए रीते करीए तोज कालिकस्रिमहाराजनी आवरणा प्रमाणे सांवत्सरिक पर्वनी आराधना करी गणाय जेओ पांचमना क्षय के युद्धिमां औद्यिकतिथिने पकडीने संवत्सरिनी आराधना करे छे.

तेओना मते सूत्र आज्ञा अने कालिकसूरिनी परं-परानो स्पष्ट भंग थाय छे. प्रश्न—१३ चंडाग्रु चंडु पंचांगमां भाद्रवा सुदि पांचम वे होय तो सांवत्सरिक पर्व कई तिथिए करवुं ?

उत्तर—राजशेखरसूरीश्वरजी महाराजे वि. सं. १४०५मां चतुर्विंशति प्रबंध रचेलो छे, तेमां शालिवाहन राजाना प्रबंधमां स्पष्ट जणाव्युं छे के—

कालिकाचार्यपश्चि पर्युषणामेकेनाह्या अर्वाग् आनायतत् स सातवाहनस्ततोऽन्यः ॥ चतुर्विंशतिप्रबंध पत्र ७०.

अर्थ — शालिवाहन राजाए कालिकाचार्यनी पासे एक दिवस पहेला पर्युषण पर्व अणाव्युं एवले कराव्युं. आ पाठ उपरथी पंचमीथी एक दिवस पहेला पर्युषण पर्व करवानुं सिद्ध थाय छे, पंचमीनी वृद्धिमां जो पंचांगनी औदायिक चोथना दिवसे सांवत्सरिक पर्व करवामां आवे तो विना कारणे आराध्य पंचमीथी बे दिवस पहेलां संबच्छरी पर्व थाय. तेम करवाथी स्वाधा अने कालिकस्रिनी परंपरानो स्पष्ट मंग थाय छे,

प्रश्न १४—श्राद्धविधिकारना कथन प्रमाणे सुर्योदय वखते जे तिथि होय तेज प्रमाणभूत गणाय, तो पछी क्वतिथिना क्षयमां औदायिक तिथि केवी रीते छेवी ?

उत्तर—पंचांगमां पर्वतिथिनो क्षय होय पण आरा-धनामां पर्वतिथिनो क्षय मनातो नथी तेमज श्राद्धविधिमां अनौद्यिक तिथि मानवानो पण निषेध करेळ छे. जुओ आद्धविधि, पत्रांक १५२उद्यंभि जा तिही सा पमाणमिअरइ कीरमाणीए ॥ आणाभंगणवत्थामिच्छत्तविराहणं पावे ॥ १॥ पाराशर-स्मृत्यादाविप-आदित्योदयवेळायां, या स्तोकापि तिथिभवेत् सा संपूर्णिति मन्तव्या प्रभूता नोदयं त्रिना ॥ १॥

अर्थ — सूर्योदय वखते जे तिथि होय तेज प्रमाण करवी जोईए. उदय विनानी बोजी तिथि प्रमाण करे तो आज्ञामंग, अनवस्था मिध्यात्व अने विराधनानुं पाप छागे. आ कारणधीज पूर्वोचार्यो उमास्वाति महाराजना प्रवोषने अनुसारे क्षय पामेछ पर्वतिथिने पूर्वनी तिथिमां औद्यिक पर्वतिथि स्थापीने आराधना करे छे तेथी आज्ञा मंग के मिध्यात्वनो दोष छागतो नथी एटछा माटेज पर्वतिथिना क्षये अपर्वतिथिनो क्षय मनाय छे तेमज पूर्णिमानी वृद्धिमां चौदशपुनमनी जोडे आराधना करवा माटे पंचांगनी प्रथम पूर्णिमाए औदयिक चतुर्दशी स्थापीने तेरशनी वृद्धि मानवामां आवे छे.

प्रश्न १५—पर्वतिथिनो क्षय माननार आराधना पर्वनी करे के अपर्वनी ?

उत्तर—नवा पंथवाळा पोताना पंचांगमां पर्वतिथिना क्षये अपर्व अने पर्वे बन्ने तिथि साथे ढखे छे अने ते प्रमाणे माने छे. श्राद्धाविधिमां कह्युं छे के—

चाउम्मासिअवरिसे पखिअपंचद्वमीसुनायव्वा ॥ ताओ तिहिओ जासि, उदेइसूरो न अण्णाओ ॥ १ ॥ पूआ पच्च÷ खाणं पिडकमणं तहय निअमगहणं च ।। जीए उदेइ सूरो, तीइ तिहीए उ कायव्वं ।। २ ।।

अर्थ—चातुर्मासिक, सांवत्सरिक, पाक्षिक पंचमी, अष्टमीने माटे ते तिथिओ छेवी के जेमां सूर्य उदय पामे; बीजी अनौदियक तिथिओ न छेवी. जे तिथिमां सूर्य उदय पामे ते तिथिने विषे पूजा, पच्चक्खाण, प्रतिक्रमण अने नियम प्रइण करवा. आ उपरथी एम सिद्ध थाय छे के पर्वतिथिनी आराधनामां अनौदियक तिथि छेवाती नथी तेथी नवा पंथवाळा पर्वतिथिनो क्षय मानीने अपर्वतिथिनीज आराधना करे छे. पर्वतिथिनो क्षय कायम राखीने ते पर्वनी आराधना करवी. आ मान्यता वेदिक धर्मवाळानी छे जैनोनी नथी.

प्रश्न १६ — पूर्णिमाना क्षये चौदश-पूनम भेगी मान

उत्तर-नवा पंथवाळा पूर्णिमाना क्षये चौदश-पुनम भेगी माने छे तेथी पाक्षिक प्रतिक्रमण तेमणे सवारमां ज करवुं जोईए केमके टिप्पणामां चौदशनो भाग सवारमां ज होय छे. बपोरना तो पूर्णिमा शरु थई जाय छे, तेथी सांजना पाक्षिक प्रतिक्रमण थई शके नहि केमके पाक्षिक प्रतिक्रमण चौदशनुं छे; पृनमनुं नथी छतां सांजना करे तो ते पाक्षिय प्रतिक्रमण पूनमनुं ज कहेवाय पण चौद्शनुं नहि, तेमनी आ मान्यता पण शास्त्रविरुद्ध छे. छौिकक पंचांग प्रमाणे पर्वतिथिनी वृद्धि माने छे ते सत्य छे ?

चत्तर—छौकिक पंचांग प्रमाणे पर्वतिथिनी वृद्धि मानवाथी आगमनी साथे स्पष्ट विरोध आवे छे. सूर्य-प्रज्ञप्ति, चंद्रप्रज्ञप्ति अने ज्योतिषकरंडक सूत्रना पाठ प्रमाणे तिथिनीज वृद्धि थती नथी तो पड़ी पर्वतिथिनी वृद्धि केम मनाय ? वळी सत्य तो ते ज कहेवाय के— जे जिनेश्वरे कह्युं होय. जुओ भगवतीसूत्रनो पाठ पत्रांक ५४, इ. १, उ. ३

से नूणं भंते ! तमेव सच्चं णीसंकं जं जिणेहिं पवेइयं । हंता गौतम ! तमेव सच्चं णीसंकं जं जिणेहिं पवेदितं ॥

अर्थ — जिनेश्वरे जे कह्युं छे तेज सत्य अने निःशंक हे ? हा, हे गौतम ! जिनेश्वरे जे प्रकृत्युं छे तेज सत्य अने निःशंक छे. अभयदेवसूरि महाराज भगवतीसूत्रनी टीकामां पण एमज कहे छे के—जेमनो मत आगमा नुसारी होय तेज सत्य मानवुं; बीजानी उपेक्षा करवी एटले छोडी देवुं. जुओ टीकानो पाठ

यदेव मतमागमानुपाति तदेव सत्यमिति मन्तव्यमित-रत्पुनरुपेक्षणीयम् ॥ भ. सू. श. १, इ. ३, पत्रांक ६२ टीका. आ उपरथी पर्व-तिथिनी हौकिक पंचांग प्रमाणे वृद्धि मानवी ते असत्य हो.

प्रश्न १८—तिथिचर्चीना सामान्य विषयने विद्वान् साघुओ आटलुं मोटुं रूप केम आपे छे ? उत्तर—आ चर्चा पर्वतिथिना क्षय वृद्धि विषयक छे. पर्वतिथिनी साची आराधना आत्मकल्याणनो अनुपम मार्ग होवाथी विद्वान् साधुओने ते महत्वनो विषय ह्यांगे छे. ते माटे जुओ श्रा विधिमां आपेळ आगमनो पाठ, पत्रांक १५३–

भयवं वीअपग्रहासु पंचसु तिहीसु विहिअं धम्माणुहाणं किं फलं होइ ? पश्च. उत्तर-गोयमा ! बहुफलं होइ । जम्हा एआसु तिहीसु पाएणं जीवो परभवाउअं समज्जिणइ, तम्हा तवो विहाणाइ धम्माणुहाणं कायव्वं, जम्हा सुहाउअं समिख्जि-णइत्ति ।'' आयुषि बध्धे तु दृदधमीराधनेऽपि बद्धायुन टलति ॥

अथ—हे भगवान्! बीज प्रमुख पांच तिथिने विषे करेल वर्मानुष्ठाननुं शुं फल थाय १ उत्तर—हे गौतम! घणुं फल थाय, कारण के आ तिथिओने विषे प्रायः घणुं करीने जीव परभवनुं आयुष्य बांघे हो, तेथी तपोविघानादि धर्मानुष्टान अवश्य करवुं जेथी शुभ आयुष्य बंधाय. अशुभ आयुष्य बंधाया पछी मजवूत रोते धर्मनी आराधना करे तो पण बांघेल आयुष्य त्रुटतुं नथी. उपर आपेल भगवती-स्त्रना पाठ उपरथी वांचकवर्गने समजाशे के पर्वतिथिनी चर्चा केटलो महत्वनो विषय हो.

प्रश्न १९—जेने माटे आगममां निधि के प्रतिषेध न होय अने जे परंपरा कई स्रदीओथी चालती होय ते परंपराने गीतार्थी पोतानी मतिकल्पनाथी दृषित करे ? उत्तर—जे परंपरा कई सदीओथी चाछती होय अने लेने माटे आगममां विधि के निषेष न जणातो होय तेवी परंपराने पण गीताथ, पोतानी मतिकल्पनाथी दूषित ठरावीने तोडे नहि. तेने माटे जुओ श्री शान्तिसूरीश्वरजीकृत धर्म-रत्न प्रकरणनो पाठ, पत्रांक २६४.

जं च न सुते विहियं न य पिंडिसिद्धं जणिम चिररूढं॥ समइ विगप्पियदोसा, तं पि न दसंति गीयत्था ।। ९९॥ टीका-इह च शब्दः पुनर्श्व इति यत् पुनर्श्वजातमनुष्टानं वा नैव सूत्रे-सिद्धानते विहितं करणीयत्वेनोक्तं चैत्यवंदना-वश्यकादिवत् न च मतिषिध्धं प्राणातिपातादिवत्, अथ च जने-लोके चिररूढमज्ञातादिभावं स्वमतिविकल्पितदोषात-स्वाभिषायसंकल्पितद्षणात् तदपि, आस्तामागमोक्तं न दुषयन्ति-न युक्तं एतदिति परस्य नोपदिशन्ति संसारद्वद्धि-भीखो गीतार्था-विदितागमतत्त्वाः, यतस्ते एवं श्रीभगव-त्युक्तं पर्यालोचयन्ति-तथाहि-''जेणं मदुया! अहं वा हेउं वा पसिणं वा वागरणं वा अन्नायं वा अदिष्टं वा अस्स्रयं वा अपरिमायं वा, बहुजणमज्झे आघवेड पन्नवेड परूवेड दंसेड निदंसेइ उवदंसेइ, से णं अरहंताणं, आसायणाए वहह, अर-हंतपन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए बद्दइ, केवलीणं आसाय-णाए वद्यः केवलीपन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए वद्यः॥

भगवती श० १८, उ० ५, सूत्र ६३५

अर्थ—जे बाबत के अनुष्ठान सिद्धान्तमां विहित एटले चैत्यवंदन अने आवश्यक विगेरेनी माफक कर्त्तव्य रूपे पण नहि कहेल होय, अने प्राणातिपातादिकनी माफक प्रतिषेघेळ पण नहि होय; ते साथे वळी जे छोकमां चिररुढ होय, एटछे ते कयारथी शरु थई तेनी खबर पडती न होय, तेने पण संसारवृद्धिमीरु गीतार्थी दूषित करता नथी पटले के 'आ परंपरा के प्रवृत्ति अयुक्त छे ' एम बीजाने **उपदेश करता नथी,** जे माटे तेओ श्री भगवती सूत्रमां कहेली नीचेनी वातने विचारे छे. हकीकत आ प्रमाणे छे-हे मंदुक िजे माणस अजाण्या, अणदीठा, अणसांभल्या अने अणपरख्या अर्थ, हेतु, प्रश्न के उत्तर भरसभामां कहे, जणावे, प्रुत्पे, बतावे, साबित करे के रजू करे ते माणस अर्हत् भगवानोनी तथा केवळीओनी आशातना करे छे. अने तेमना धर्मनी पण आशातना करे छे, अने तेमना चित्तमां आ वात पण स्फ़रे छे के-

संविग्गा गीयतमा विहिरसिया पूच्चसूरिणो आसि ॥ तददृसियमायरिय–अणइमई को निवारेइ ॥ १००॥

अर्थ—संविग्न एटले जल्दी मोक्ष इच्छनारा अने अतिशय गीतार्थ केमके देमना वखते बहु आगमो हता, तथा संविद्न हावाथीज विधिरसिक एटले विधिमां जेमने रस पडतो हतो एवा अर्थात् विधि बहुमानी पूर्वसूरिओ एटले चिरंतन आचार्यो हता, तेमणे अणदूषेलुं एटले

नहि निषेधे छं आचरित एट छे बधा धार्मिक छोकमां चाछतो व्यवहार, तेने अनित्राची एट छे विशिष्टश्रुत के अविध बगेरे अतिशय रहित कयो माणस पूर्व पूर्वतर उत्तम आचार्योंनी आशातनाथी डरनारो होई निवारी शके ? कोई ज नहि. बछी गीतार्थों तो आ पण विचरे छे के-

अइसाहसमेय जं उत्युत्तपरूवणा कडुविवागा । जाणंते हिं वि दिज्जइ निहंसी सुत्तवज्झत्थे ॥ १०१ ॥

अर्थ-- उत्सूत्रप्ररूपणा कडवां फल आपनारी छे, एवुं जाणता छतां पण जेओ सूत्रवाहा अर्थमां निश्चय आपी दे छे, ते अति साइस छे, एटढें छुं कहुं ते कहें छे-

दुब्भासिएण इक्केण मरीई दुक्खसागरं पत्तो ।। मिमओ कोडाकोर्डि-सागरसिरिनामधिज्जाणं ॥१॥ उस्मुत्तमावरंतो-ंधइ कम्मं सुचिक्कणं जीवो ॥ संसारं च पवड्दइ-मायामांसं च कुव्वइ य ॥ २ ॥

अर्थ—मरीचि एक दुर्भाषित व बनथी दुःखना दरि-यामां पडी कोडोकोड सागरोपम भम्यो ॥ १.॥ उत्सूत्र आचरतां जीव चीकणां कर्म बांघे छे अने मायामृषावाद सेवे छे. ॥ २ ॥ आ उपर आपेळ धर्मरत्न प्रकरणना बाटथी वांचको समजी शकया हशे के जे बाबत सूत्रमां विहित न होय तेम निषेध पण करेळ न होय अने धार्मिक छोकमां छांबा वखतथी चाळतो व्यवहार होय तेने पण गीताथों 'आ अयुक्त छे 'एम कहे निह तो पछी सूत्र, ग्रंथ अने पूर्वाचार्योंनी परंपरासिद्ध तेमज कई सदीओथी चाली आवती पर्वतिथिनी क्षय के चृद्धिमां कराती अपर्वतिथिनी क्षय चृद्धिनी आचरणाने केम तोडी शकाय? जे भवभीर गीतार्थों होय ते तो आनं खंडन करेज नहि.

प्रश्न २०—कोई माणस आखुं सूत्र माने पण ते सूत्रना एक पद के अक्षरने न माने तो तेने सम्यग्-दृष्ठि कहेवो के मिध्यादृष्टि ?

उत्तर—कोई आखुं सुत्र माने पण ते सूत्रना एक पद के अक्षरने न माने तो ते जमान्डिनी माफक मिथ्या दृष्टि कहेवाय. ते माटे जुओ विशेषावश्यक भाष्यनो पाठ-

पयमक्तरंपि इक्कं च जो न रोएइ सुत्तनिहिट्टं ॥ सेसं रोअंतो वि हु मिच्छदिट्टी जमालिव्य ॥१॥

अर्थ — जे माणसने सूत्रमां कहेल एक पद के अक्षर न इने अने बाकीनुं आखुं सूत्र इने एटले माने तो पण जमालिनी माफक तेने मिध्याद्दि जाणवो, सम्यक्त्व होय निह

प्रश्न--२१ नवा पंथवाळा पोताना पंचांगोमां पर्व-विधिना क्षयमां उदय न मळे तो समान्ति जरुर छेवानुं छसे। हो ते योग्य छे ? उत्तर—आराधनामां उद्य न मळे तो समाप्ति छेवी आ अन्य गच्छनो मत छे. श्राद्धविधिकार तो आराधनामां औद्यिक तिथि ज मानवानुं कहे छे; पण समाप्तिना निर्देश करता नथी उद्यंमि जा तिही सा पमाणं पत्यादि पटला माटे ज पर्वतिथिना क्षये तेना पूर्वनी तिथिमां आराध्य औद्यिक तिथि स्थापीने अपर्वतिथिनो क्षय मान-वामां आवे छे.

प्रश्न २२-- तवा पंथवाळा पर्वतिथिनी वृद्धि कहे छे छे ते हु उत्सूत्र छे ?

उत्तर—-जैनागम प्रमाणे तिथिनी वृद्धि ज थती नथी एम नवा पंथवाळा जाणे छे, छतां पर्वतिथिनी वृद्धि थाय एम कहे तो ते चोककी उत्सूत्रप्रदर्गाज छे.

प्रश्न २३-- उत्सूत्र प्ररुपणा करनारना दर्शनथी सम्यग्

उत्तर-- उत्सूत्रप्रत्यणा करनारनुं दर्शन पण संसार-वर्धक कह्युं छे, ते माटे जुओ कल्पभाष्यनो पाठ---

उस्मुत्तभासगा जे ते दुक्करकारगा वि सच्छंदा ॥ ताणं न दसणं पि हु कप्पइ कप्पे जओ मणियं ॥१॥ जे जिणव-यणुतिण्णणं वयणं भासंति अहत्र मन्नंति ॥ सम्मदिद्वीणं तदंसणं पि संसारबुड्डिकर ॥२॥

अर्थ-जे उत्सूत्र बोछे छे ते दुष्कर किया करता होय तो पण तेमने सूत्रकार स्वच्छंदी कहे छे. तेमनुं दर्शन करवुं पण कल्पे निह जे कारणथी कल्पभाष्यमां कह्युं छे, (१) जेओ जिनेश्वरना वचनथी विरुद्ध वचन बोळे छे अथवा ते प्रमाणे माने छे तेमनुं दर्शन पण सम्यग्दृष्टि जीवने संसारवर्धक छे. आ उपरथी वाचको समजी शकशे के उत्सूत्रप्ररूपणा करनार पोते संसारसमुद्रमां डूबे छे अने आश्रितोने पण डूबाडे छे,

प्रश्न २४—एक जीव ज्ञान अने कियामां शिथिल छे. परंतु प्ररुपणा शुद्ध करे छे अने बीजो ज्ञान अने कियामां अप्रमत्त छे, त्यागी छे पण जाणीजोईने उत्सूत्रपरुपणा करें छे तो आ बेमां श्रेष्ट कोण गणाय ?

उत्तर—हितोपदेशमाला प्रथमा अभिप्राय प्रभाणे तो शुद्ध प्ररुपक ज श्रेष्ट गणाय, केमके शिथिलाचारथी पोते डूबे हे पण बीजाने डूबाहतो नथी त्यारे त्यागी उत्सूत्र प्ररुपक तो स्वपरने डूबाडे हे.

ते माटे जुओ पूर्वाचार्यप्रणीत हितोपदेशमाङानो पाठ नाणाकिरियासु सिढिला अप्पाणं चिय भवंमि पाडंति॥ वितहा परूवणा पुण अणंतसत्ते भमाडंति ॥ ४७४॥

अर्थ—ज्ञान अने क्रियामां शिथिल एवो पोताना आत्माने ज संसारसमुद्रमां पाढे छे, परंतु बीजाओने द्वाडतो नथी त्यारे उत्सूत्रपरुपणा करनारा त्यागीओ तो पोते भवसमुद्रमां परिश्रमण करे छे अने उपदेशयी बीजा अनंत जीवोने भवश्रमण करावे छे.

प्रश्न २५—छौकिक पंचांगमां वे पूर्णिमा होय त्यारे चतुर्दशीए ज पाक्षिक प्रतिक्रमण करवुं, आ मान्यता खरत-रगच्छनी छे के तपागच्छनी?

उत्तर-- छौकिक टिप्पणमां वे पूर्णिमा होय त्यारे चतर्रशीए ज पाक्षिक प्रतिक्रमण करवुं, आ मान्यता खर-तर गच्छनी छे; तपागच्छनी नथी. खरतरगच्छवाळा टिप्प-णामां पर्वतिथिनी वृद्धि होय त्यारे पहेली तिथि महण करे छे. बीजी तिथि मानता नथी चतुर्दशीएज पाक्षिक प्रतिक्रमण करे छे एटछे तेमनी चतुर्दशी अने पूर्णिमानी अनंतर आराधना कायम रहे छे. तपागच्छवाळा श्री उमा-स्वातिन। प्रघोषानुसार वृद्धिमां बीजी तिथि प्रहण करे छे तेथी चतुर्देशी अने पूर्णिमानी अनंतर आराधना कायम -राखवा माटेज पंचांगनी प्रथम पूर्णिमाए औद्यिक चतर्दशी स्थापीने पाक्षिक कृत्य करे छे तपागच्छनी आ मान्यतानुं उपाध्याय श्री धर्मसागरजीए पोताना उत्सूत्रो द्वाट्टन कुलकमां सारी रीते समर्थन कर्युं छे. खरतरगच्छीय आचार्यश्री जिनचंद्रसूरिजीना प्रशिष्य वाचनाचार्यश्री गुणविनयगणिए पण वि. सं. १६६५मां वेळ उत्सुत्रखंडन प्रंथमां पण आ बाबतनो निर्देश कर्यों छे, जुओ ते पाठ-अन्यच्च इद्धौ (पूर्वतिथौ) पाक्षिकं कियते इदं किं? आगळ इट्टो छीटोमां तेओश्री स्पष्ट ढखे छे के-

चतुर्दश्यां पौषधोपवासादिधर्मकृत्यादि पाक्षिकप्रति-क्रमणं च निषेध्य प्रथमअमावस्यां प्रथमपूर्णिमायां च पाक्षिकप्रतिक्रमणादिकरणं.

इत्सूत्र खंडनग्रंथ पानुं २० मुं.

प्रश्न २६ -- छोकिक टिप्पणामां अमावास्या के पूर्णि मानो क्षय होय तो पाक्षिक प्रतिक्रमण चतुर्दशीएज करवुं, आ मान्यता कथा गच्छनी छे ?

उत्तर—छौकिक टिप्पणामां अमावास्या के पूर्णिमानो भ्रय होय तो चतुर्दशीएज पाक्षिक कृत्य करवुं आ मान्यता स्वरतरगच्छनी छे; तपागच्छनी नथी. तपागच्छवाळा तो पोतानी समाचारी मुजब अमावास्या के पूर्णिमानो क्षय होय तो टिप्पणानी तेरशे औदियक चतुर्दशीनी स्थापना कीने पाक्षिक कृत्य करे छे. आ बाबत उपाध्याय श्री धर्मसागरजीए उत्सुत्रोद्धाटनकुळकमां स्पष्ट शब्दोमां छस्नी छे

परम अवधूत योगिराजश्री आनंदघनजी महाराज पण श्री अनंतनाथस्वामीना स्तवनमां उत्सूत्रप्ररूपणानी अयंकरता समजावतां कहे छे के-

पाप नहीं कोई उत्सूत्र भाषण जिस्रो,
धर्म नहीं कोई जगसूत्र सरिखो;
सूत्र अनुस्रार जे भविक किरिया करे,
तेहनुं शुद्ध चारित्र परिस्रो.
धार तद्धवारनी स्रोहली दोहली....

अर्थात् के जैन सिद्धांतो जैनागमोथी विरुद्ध कथन करवा जेवुं एक पण महापाप नथी; कारण के सरोवरमां फेंकेला कंकरथी जेम जळना कुंडाळा वधतां समस्त सरोवरमां प्रसार पामी जाय छे तेम एक मात्र उत्सूत्र-वचन ते विस्तार पामतां समस्त शासनने छिन्नभिन्न करी मूके छे. शहआतमां तो निर्जन अरण्यमां एक मात्र पगदंडी ज (केडी) पढे छे, परंतु तेना पर विशेष अवरजवर थतां ते एक महामार्गनु समजी छेवुं. तेथीज शास्त्रकारोए उत्सूत्र-प्ररूपणांने तोले आवे तेवुं. एक पण पाप गणाव्युं नथी. बीजा पापा तो अन्य धर्मकरणी के तीर्थयात्रादि करतां विनाश पामे परंतु उत्सूत्र-प्ररूपणा तो अनंत भवभ्रमण वधारे छे. जुको चरम जिनपति श्री महावीरस्वामीना पूर्वभवनुं मरिचीनुं दृष्टांत.

उत्सूत्र-प्रश्पणाथी भोळा प्राणीओ भोळवाई जाय छे. अने धर्मने बर्छे अधर्मनुं आचरण करी बेसे छे, माटे ज श्री आनंदधनजी महाराज फरमावे छे के-आ विश्वमां सूत्रोमां फरमाव्या प्रमाणे उपदेश करवा सिवाय बीजो कोई उत्तम धर्म नथी. सूत्र ए दीवादांडी सहश छे. जेम दीवा दांडी समुद्रमां अटवायेला जहाजने किनारा पर लाववामां सहायक बने छे तेवी रीते आगमशास्त्रो जीवन नौकाने भव-समुद्रमांथी तीरे खेंची लाववा समर्थ बने छे; एटले के जे भव्य प्राणीओ तीर्थंकर भगवंतीए उपदेशेल अने गणधर महाराजोए गृंथेला सूत्रो प्रमाणे क्रिया करे छे अने खरेखर चारित्र पाळे छे तेओज खरेखरा संयमवंत छे-तेनेज मोभ्रमार्गना साचा पथिक जाणवा

नागपुरी तपागच्छीय श्री रत्नशेखरसूरिजी 'संबोधसत्तरी' नी पांत्रीशमी गाथामां जणावे छे के-

आगमं आयरंतेणं, अत्तणो हियकंखिणो। तिरथनाहो गुरु धम्मो, सन्वे ते बहुमन्निया॥

आत्म-कल्याणार्थी पुरुषे आगमना रहस्यनं आचरण करवापूर्वक तीर्थिकर श्री अरिहंत भगवंत, सद्गुरु अने केवली-भाषित धर्म ए सर्वनं अत्यंत आद्रपूर्वक बहुमान करवं, तेने अंगीकार करवो.

अत्यंत विषम एवा आ दूषमकाळमां-किळकाळमां श्री जिनागमोज परमाळंबनभूत छे. जिनागमो न होत तो अनाथ एवां आपणी शी दशो थात ? माटे परम पुण्योद्ये प्राप्त थयेळ पंचांगीने मान्य राखी शास्त्रविहित आचरण करवुं एज भवभीरु प्राणी माटे डिचत छे.

प्र० २७— नवा पंथवाला कहे छे के बीज पांचम आदि बार पर्व तिथिनी क्षयके वृद्धिमां प्रवेनी अपर्व तिथिनी क्षयके वृद्धि करो छो तो पल्ली कल्याकनी तिथिओ पण पर्व तिथि कहेवाय छे तो ते तिथिओनी क्षयके वृद्धिमां पूर्वनी तिथिओनी क्षयके वृद्धिमां पूर्वनी तिथिओनी क्षयके वृद्धि केम मानता नथी ?

ड० — बीज पांचम आठम आदि बार पर्व तिथिओ क्षेत्रने आश्रिने पंदर कर्म भूमिमां अने कालने आश्रिने भूत — भविष्य अने वर्तमान त्रणे कालमां नियत एटले एक सरखी छे, त्यारे कल्याणक तिथिओ अनियत छे एटछे एक सरस्वी होती नथी, बीजु कारण ए के अष्टमी चतुर्दशीना दिवसे साधु तप न करे, सर्व चैत्योने तथा अन्य स्थानमां रहेला साधुओने वंदना न करे तो प्रायश्चित्त आवे एम नव्य यति जीतकल्पमां लख्यु छे पण कल्याणकनी तिथिए तप न करे तो प्रायश्चित्त आवे एवं लख्यु नथी जुओ नव्य यति जीतकल्पनो पाट-चउ छट्ठ द्वमऽकरणे अट्ठमि पक्स चाउमास वरिसेसु। लहु गुरु लहुगा गरुगा अवंदणे चेइ साहुणं॥२३१॥

व्याख्या—यथासंख्यं पदयोजना साचैवम् अष्टम्यां चतुर्थस्याकरणे मासलघु (पुरिमुड्ढं) चतुर्दश्यां (पाक्षिके म.) चतुर्थस्याकरणे मासग्रह (एकाशनकं) चतुर्मासिके षष्ठ-स्याकरणे चत्वारो लघुनासाः (आचाम्लं) सांवत्सरिके अष्टमस्याकरणे चत्वारो गुरुमासाः (उपवासं) तथा एतेषु एष्टम्यादिषु दिवसेषु चैत्यानां जिनविवानां अन्यवसितगत सुसाधूनां चावंदने पत्येकं लघुमासः (पुरिमुड्ढं) ॥२३१॥

अर्थ — आठमना दिवसे उपवास न करें तो पुरिमहुनुं प्रायिश्चत्त आवे चतुर्दशीना दिवसे उपवास न करें तो एकाशनानो प्रायिश्चत्त आवे चडमासीनो छट्ट न करें तो आंबीढनो प्रायिश्चत्त आने संवच्छरीनो अट्टम न करें तो अपवासनुं प्रायिश्चत्त आने तथा अष्टमी चतुर्दशी आदि पर्व तिथिओना दिवसे सर्व जिन विवोने तथा अन्य स्थानमां रहेढा बीजासु साधु शोने वंदना न करें तो दरेकमां पुरिमङ्कनो प्रायिश्चत्त आने एम सोम प्रमसूरि उद्घृत यित जीतकल्पमां कह्युं छे तथी पूर्वाचार्यो बार

पर्व तिथिनी क्षय के वृद्धिमां पूर्वनी अपर्व तिथिनी क्षय के वृद्धि करे छे पण कल्याणकनी तिथिओमां पूर्वनी तिथिओंनी क्षयके वृद्धि करता नथी कारणके कल्याकनी तिथिओ अनियत छे अने पनुं तप न करे तो प्रायिश्चत्त पण छल्यु नथी

आज हकीकत कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचंद्राचार्ये स्वरचित श्री वीतराग स्तोत्रना ओगणीशमा प्रकाशमां स्वष्टरूपे जणावी छे. आ हकीकत परथी आ वस्तुनी गहनता अने महत्ता समजाशे. तेओश्री कहे छे के-

वीतराग ! सपर्यायास्तवाज्ञापालंन वरम् । आज्ञाऽऽराद्धा विराद्धा च, शिवाय च भवाय च ॥

अर्थात् हे वीतराग ! आपनी सेवा करवा करतां आज्ञानुं पालन करवुं ते भावस्तवरूप होवाथी उत्कृष्ट फळ आपनार छे; केमके आज्ञानुं आराधन माक्षने माटे थाय छे अने आपनी आज्ञानी विराधना संस्नार-भ्रमणने माटे थाय छे.

अंतमां पू. उपाध्यायश्री यशोविजयजी महाराजुना टंकशाळी वचन उद्धरीने विरमोश-

कलहकारी कदाग्रहभर्या, थापतां आपणा बोल रे; जिनवचन अन्यथा दाखवे, आज तो वाजते होल रे.

स्वामी सीमंधरा त्रिनति

#### उपसंहार

आ पर्वतिथिप्रश्नोत्तरिवचारनी छघु पुस्तिकामां आपेछ सूत्र अने प्रथमा प्रमाणोथी वांचको समजी शक्या हरो के आराध्य तिथिओनी क्षय के दृद्धि मनाती नथी तेथी जन्मभूमि पंचांगमां पर्वतिथिनी क्षय के दृद्धि होय त्यारे अपर्वतिथिनी क्षय के वृद्धि कराय छे अने अमावास्या के पूर्णिमानी क्षय के वृद्धि होय त्यारे तेना बदले तेरशनी क्षय वृद्धि थाय छे, तेमज टिप्पणामां भादरवा सुद पंचमा वे होय त्यारे कालिक सूरीश्वरजी महाराजनी आचरणा मुजब आराध्य पंचमीथी एक दिवस पहेला एटले बीजी चोथे अने भादरवा सुद पंचमीनो क्षय होय त्यारे त्रीज—चोथ भेगा गणीने पंचमीथी एक दिवस पहेला सांवत्सरिक पर्व थाय छे. इत्यलं विस्तरेण ।।

#### नवा पंथनी मान्यता

दर्शनमोहनीय कर्मना उदयथी नवा पंथवाळाने सूत्र अने परंपरानी वात रुचती नथी, तेथी तेओ कहे छे के— आपणा जैन पंचांगो घणी सदीथी विच्छेद गया छे माटे छौकिक पंचांग प्रमाणेज मानवुं तेथी तेओ पर्वतिथिनी क्षय-पृद्धि करे छे अने पुनमनो क्षय होय तो चौदश-पुनम भेगी माने छे अने पूर्णिमानी वृद्धिमां सान्तर चौदश-पुनम माने छे.

#### शासनपक्षनी मान्यता

शासनपक्ष जैन पंचांगना अभावे सूर्यप्रज्ञाति सूत्र, चंद्रप्रज्ञाति सूत्र, ज्योतिषकरंडक सूत्र अने पूर्वाचार्योंनी परंपराने
अनुसारे छौकिक जन्मभूमि पंचांगमां पर्वतिथिनी क्षय के वृद्धि
आवे तो तेना बद्छे अपर्वतिथिनी क्षय के वृद्धि करे छे.
पुनम अने अमावास्यानी क्षय के वृद्धि तरसनी क्षय वृद्धि
करे छे, पण पर्वतिथिनी क्षय के वृद्धि मानता नथी. विक्रम
संवत १९९२ना भादरवा चिद् अमावास्या सुधी तो नवा
पंथवाळा पण आ प्रमाणे ज मानता हता, पण पछीथी जुदा
पहचा. विचित्रा कर्मणां गतिः।

## दिगंबरो विषे जाणवाजोग

सूत्रो सदंतर विच्छेद गयानी दिगंबरोनी मान्यता साची नथी.

दिगंबरो अंग सूत्रोने वीर संबत ६८३ सुधीमां एटछे के विक्रमनी बीजी शताब्दिनो शरुआतमां ज तद्दन विच्छेद गया एम माने छे तेथी तेओ श्वेतांबरोमान्य सूत्रोनो स्वीकार करता नथी.

त्यारे कषाय पाहुड श्री गुणधराचार्ये विक्रमनी बीजी शताब्दिमां रच्युं हुतुं तेनुं विवेचन करतां छखे छे के—

'वीर संवत ६८३ बाद अंगो अने पूर्वीनं एक देश (पटले अधुरु) ज्ञानज परंपराथी श्री गुणधराचार्यने प्राप्त श्रयुं अने ते भट्टारक गुणधराचार्ये जे ज्ञानप्रवाद नामनां परिमां पूर्वनी दशमी वस्तुनी अंतर्गत त्रोंजा कवाय पाहुड अधिकारनां पारंगत हता. तेमणे प्रवचन वात्सव्यथी वशीभूत थईने प्रंथ विच्छेद थवाना भयथी सोळ हजार पद प्रमाणे पेज्जदोस पाहुडानो १८० गाथाओ द्वारा उपसंदार कर्यों '(जय धवछा पु. १ पानुं ४१)

एरछे के वीर संवत ६८३ (विक्रमनी बीजी शताब्दिमां अंगसूत्रो संपूर्ण विच्छेर गया नहोता पण पूर्वी सहित सर्व अंगसूत्रोनु थोडुं ज्ञान विच्छेद् गयुं हतुं. अने थोडुं ज्ञान प्राप्त हतुं.

ते कषाय पाहुड उपर आचार्यश्री यतिवृषभे विक्रमनी छट्टी शताब्दिमां चूर्णी रची अने आचार्य श्री वीरसेन तथा जिनसेने विक्रमनी नवमी शताब्दिमां जय धवला टीका रची.

सूत्रो जो विच्छेद गया होय तो तेनुं ज्ञान १ण विन्छेद जाय. विच्छेद जवुं एटछे भूलाई जवुं. कारण सूत्रो मोढे हता. अने पछी याद रहेला ज्ञानमां मित विश्रमधी अयथार्थता आवी गई होय.

स्त्रो विच्छेद गया पही पण स्त्रनुं ज्ञान यथार्थ रहे हो. एम दिगंबरो कहे तो ते हिसाबे श्वेतांबरो पासे रहे हो स्त्रोमां पण यथार्थ ज्ञान छे एम तेमणे कबुल करवुं जोईए. कारण के नहितर कषाय पाहुडनी टीका अयथार्थ ज्ञानमांथी निष्पन्न थई छे एम मानवुं पडे. परन्तु अहिंया तो ठेठ विक्रमनी नवमी सदीमां आवार्थ श्री वीरसेन तथा जिनसेने मळीने साठ हजार श्लोक प्रमाण जयधवला नामनी मोटी टीका रची छे. अने तेने प्रमाण आगम तरीके मान्य गणवामां आवे छे.

आ उपरथी मानवुं ज पडशे के पूर्व तथा अंगस्त्रोनुं एकदेशीय ज्ञान ठेठ विक्रमनी नवमी शताब्दि सुधी प्राप्त इतुं. एटले के सूत्रो संपूर्ण विच्छेद नहोता गया पण तेनो केटलोक भाग विच्छेद गयो हतो, अने बाकीनो भाग मोजुद हतो.

## दिगंबरोना एकांत आग्रहनुं परिणाम

दिगंबरोए अचेलकपणुं-नग्नपणाने एकांत आग्रहधी पकडी राख्युं तेनुं परिणाम ए आव्युं के—

- (१) स्त्री नग्न रही शके निह तथी स्त्रीने चारित्र अने मोक्ष होई शके निह एम दिगंबरोने जाहेर करवुं पड्युं.
- (२) वस्त्र विना पात्रो छई जई शकाय नहि तेथी पात्र रास्त्रवानी बंधी करवी पडी.
- (३) पात्रो विना आहार छ वी शकाय निह अने आहार छ। व्या विना तीर्थंकर भगवान आहार करी शके निह तेथी केवळी भगवानने आहार होय निह एम जाहेर करवुं पड्युं.
- (४) नग्नवादनां कारणे उपर प्रमाणे स्त्रीमुक्ति, केवळी भुक्तिनो निषेध कथीं. ते उपरांत गृहस्थिलिंगमुक्ति, अन्यिलेंग मुक्ति विगेरे अनेक बाबतोनो दिगंबरोने निषेध करवो पड्यो छे.

आ तेमना निषेधो तेमना ज (दिगंबरोनां) शास्त्र प्रंथोयी विरुद्ध जाय छे. तेनी केटलीक विगत 'जैन परंपरानो इतिहास' नामना पुस्तकमां पाना ३१९ थी ३२५मां आपी छे. तथा उ. श्री यशोविजयजीना प्रन्थोमां तथा श्री आत्मारामजीना 'तत्त्वनिर्णयप्रासाद पुस्तकमां आपी छे. ते स्थळ संकोचने लीघे अहं आपी शकाई नथी, तो जिज्ञासुए त्यांथी जोई छेवी.

### दिगंबरोने एकांत आग्रहथी नुकशान

वस्त्रपात्र वगेरे उपिधनो निषेध करी नग्नतानो आग्रह राखवाथी दिगंबरोने घणुं नुकशान थयुं छे. तेमांनुं थोडुंक नीचे प्रमाणे छे.

- (१) नग्नताथी धर्मनी अने संप्रदायनी निन्दा थाय छे अने धर्म प्रचार अटकी जाय छे
  - (२) विद्वारमां अडचणो उमी थाय छे.
  - (३) बाळको नग्न साधुने जोई हरे छे.
- (४) सभ्य समाज घृणा करे छे अने पोताना घरमां आववा देता नथी.
  - (५) सरकार नग्नने रस्तामां चालवानी बन्धी करे छे.
- (६) जिनशासनने अनेक रीते नुकसान पहोंचे छे. फक्त वे चार हाथनां कपडानो पण निषेध करवाथी ए नुकसान उठाववुं पडे छे. वस्त्रधारी मुनि बघे जई शके छे. अने आवा नुकसानोथी धर्मने बचावे छे.
- (७) अजैननां आहार पाणी बंध थई जाय छे. कारण अजैनो नग्न साधुने घरमां आववा देता नथी तेमज आहार पाणी देवामां घृणा करे छे तेथी अजैनने त्यां गोचरीए जई शकातुं नथी.
- (८) एकज घेरथी गोचरी करवी पडे छे तेथी आधा-कर्मिक औदेशिक आदि दोष छागे छे.

- (९) गुरुभिक्तिने तिल्लांजली आपत्री पडे छे, गुरुने बतावी गुरुनी आज्ञानुसार गुरुदत्त आहार लेवानो लाम गुमावे छे, अने गुरुने बताव्या विना लेवाथी क्वचित् स्वच्छंदताने अवकाश मळे छे.
- (१०) पात्रनां अभावमां विमार तथा वृद्ध माटे आहार पाणी छावी शकाता नथी. तेम गृश्स्थनां छावेछा आहार पाणी पण वापरी शकाता नथी तेथी निराहार रहेवुं पडे छे.
- (११) आवी स्थितिमां विमार-वृद्ध साधुने आर्तरौद्र ध्यानमां पडी जई आत्मानुं अकल्याण थवानो संभव छे.
- (१२) करभोजीनां हाथमांथी खोराकनो अंश नीचे पडी जाय छे तेथी जीव विराधना निन्दा थाय छे,
- (१३) महावीर भगवाने स्थापेड चतुर्विध संघने दिगंबरोए खंडित करेल छे. कारण के तेओमां साघ्वी संब ज नथी. स्त्री दिगम्बर रही शके निह माटे साध्वी थई शके निह. तेथी दिगम्बरोमां चतुर्विध संघज नथी.

दिगंबरोमां जैन सिद्धांत त्रिरुद्धनी केटलीक खोटी मान्यताओ पण प्रक्रों छे, तेना त्रण कारणा छे.

- (१) नग्नत्वना आम्रहने लीघे नग्नत्वनी विरुद्ध जती बाबतोनो अस्वीकार करवा माटे ते ते बाबतोथी उल्रटी श्रह्मणा करवी पडी.
- (२) श्वेतांवरोथी छूटा पडीने तेमनो अने तेमना साहित्यनो संपर्क खोवाथी मूळ मान्यता भूठी जवाथी दिगंवर

आचार्योए पोतपोतानी करूपना अनुसार नवी नवी माम्यताओं प्रवर्तावी.

(३) ब्राह्मणोतुं समाजमां वर्चस्व थतुं जोईने दिगंबरोए ब्राह्मणना घणा आचारिवचारोतुं अनुकरण कर्युं. अने ए खोटी मान्यताओ प्रवर्तावती वखते दिगम्बरो तेमना ज पूर्वाचार्योए बनावेला शास्त्रोमां शी शी प्ररुपणा करी छे. ते जोवानुं विचारवानुं ज भूली गया, अटले दिगम्बरोनी घणी खरी मान्यताओ तेमना ज शास्त्रोना विधाननी विरुद्ध जाय छे.

दिगम्बरोना जेवी श्वेतांवरो उपर झःहाणोनां आचार-विचारनी असर थई नथी कारण के श्वेतांवरो मूळ जैन सिद्धांतने चीवटपणे वळगी रहा हता.

दिगम्बरोनी मान्यताओ तेमना ज शास्त्रोनी विरुद्ध छे ते मुनिश्री दर्शनविजयजीओ तेमना 'श्वेतांबर दिगम्बर' नामना पुस्तक्रमां दिगम्बर शास्त्रोना अनेक उल्लेखो आपीने बताबी आप्युं छे, जिज्ञासु जैनोए ए पुस्तक जरुर बांची जवुं.

# धर्मदेशना समये साधु-म्रुनिराजे मोढे मुहपत्ति बांधवी ए गीतार्थ परंपरागत आचारणा छे.

-:0:--

आ ट्रंका निवंधमां मुख पर मुहपत्ति बांधवी ए केटली प्राचीन अने मूळभून गीतार्थपरंपरा छे तेनुं दिग्दर्शन कराञ्युं छे एटलुं ज नही परन्तु तेने लगता शास्त्रगठो आपी विषयनुं सचोटपणुं दर्शाञ्युं छे. श्री प्रवचन परीक्षामां आवतो मुहपत्तिनो उल्लेख, विधिप्रपामां रज् थयेल उल्लेख, पू. श्रो. आत्मारामजी महाराजनुं कथन आ हकीकतने विशेष पुष्ट करे छे.

श्री प्रवचनपरीक्षामां आवतो पाठ साधु-मुनिराजने कान वींधाववा अंगेनो छे ज्यारे श्री उपदेशपाद्यादनो पाठ श्रृंकथी इच्छिड्ठ एठी थयेळ मुह्दपत्तिने जुदी राखवा अंगेनो छे.

गणधर भगवंतो पण धर्मदेशना समये मुख पर मुह-पत्ति बांधता हता. आ संबंधमां एक ख्याल ए राखवानो छे के-स्थानकवासी संप्रदायना मुनिवर्गनी माफक मुह्पत्ति दोराथी बांधीने हंमेशने माटे मुख पर राखवानी नथी. धर्म-देशना समयेज प्रवचनमुद्रा के योगमुद्राएज व्याख्यान आपवानुं होवाथी, संपातिम जीव के वायुकायना जीवोनी हिंसाथी बचवा तेमज शास्त्र के आगम पर थूंक ऊडीने आशातना न थाय ते माटेज मुख पर मुहपत्ति बांधवानुं गीतार्थ-कथन छे.

फक्त आपणामांज आवुं कथन छे एटलुंज नहिं परन्तु पारसीओ, मुस्लीमो, वैष्णवो पण पवित्र पुस्तक वांचन विखते रुमाल, कपडुं के लाकडांनी पट्टी मुख आगळ राखें े छे, जे आपणी गीतार्थ परंपरागत हकीकतनुंज विशेष समर्थन करे छे.

#### X

आगममायरंतेणं अत्तगो हियकंखिणो। तित्थनाहो गुरुधम्मो सन्तरे ते बहुमन्निया॥

आत्मिहितनी इच्छावाळाए आगमनो आद्**र करता** तीर्थंकर भगवान् . गुरु अने धर्म ए बधानो आद्**र कर्यों** गणाय.

### --संबोधसप्ततिका

धर्मशास्त्र वांचती वखते मोढा उपर मुद्दपत्ति अथवा कपडु बांधवानी प्रथा जैन तथा जैनेतर धर्ममां घणा काळथी प्रविद्या छे. मुसलमानो कुरान वांचती वखते मोढा पर रुपाछ बांचे छे. पारसीओमां मंत्रोचचार करती वखते मोढा पर कपडुं बांधवानो रिवाज छे, सांख्यमतवाळा जीवदया निमित्ते मोढा आगळ लाकडानी मुद्दपत्ति बांधे छे. वैष्णतो भागवत वांचती वखते मोढा पर कपडुं बांवे छे, आ तो जैनेतर दशननी वात थई, परन्तु जनदर्शनमां तो धर्मदेशना भापति वस्तते मोढा पर मुहपत्ति बांघवानो रिवाज गणधर महाराजना समयथी चाल्यो आवे छे ते माटे वादिवेताल श्री शान्तिसूरि महाराज श्री चैत्यवंदन महाभाष्यमां "देशना" ना अधिकारमां स्पष्ट रीते कहे छे के—

सिंहासणे निसन्नो, पाए ठिवऊण पायपीढंगि।
करधिरयजोगमुदो, जिणनाहो देसणं कुणइ।।८४॥
तेणं चिय सुरिवरा, कुणंति वक्खाणमेयमुद्दाए।
जं ते जिणपिडस्वा, धरंति सुद्दणोत्तियं नवरं॥८५॥

अर्थ: — पाद्पीठ उपर पग स्थापन करी, सिंहासन उपर बेसी, हाथमां योगमुद्रा धारण करीने जिनेश्वरदेव धर्म-देशना आपे छे, तेथी जिनेश्वरभगवंतना प्रतिनिधिरूप एटळे जिनेश्वरना सरखा गणधर महाराज पण योगमुद्रापज धर्म-देशना आपे छे, विशेषमां एटळुं के तेओ मोढा पर मुहपत्ति धारण करे छे, एटळे कानना छिद्रमां भरावे छे. पण स्थानक-वासीनी माफक दोराथी बांधता नथी. गणधर महाराज पण यथावसरे मोढे मुहपत्ति बांधता हता, ए वातनो स्पष्ट खुळासो "प्रश्लोत्तरसार्धशतक"मां एण मळी आवे छे. जुओ ते पाठ—

ननु आधुनिकाः केचिल्छिङ्गिनो निह्नवाः सर्वदाः द्वरकेण मुख्यक्तिकां मुखे बद्धेये रक्षन्ति, चिज्ञनाज्ञानु-सारि उत तिद्वरुद्धं ? उच्यते-जिनाज्ञाविरुद्धमेवेदमिति ज्ञायते, क्वापि सूत्रे इद्दग्विधेरनुक्तस्वात्, विश्व शार्षेषु यत्र [8]

यत्र मुखबिक्षकाधिकारोऽस्ति तत्र तत्र ववापि दवरकस्य नामापि नास्ति, तथा श्रीसुधर्मास्वामिन आरभ्याऽविच्छिन न्नायुष्पर्पर्योऽपि क्वापि धर्मगच्छे दवरकेण मुखबिक्षका-बन्धनं न दृश्यते, इति जिनागमविद्यिताऽऽचरणाभ्यां विरुद्धमेव तावत् दवरकबन्धनम्। अन्यच्चगणधरादिभिरपि यथावसरे मुखे मुखबिक्षका बद्धासीत् न सर्वदा, यदि सर्वदा बद्धा भवेत्, तिर्द्धं विपाकसूत्रपाठाऽसंगतिः स्यात्।

अर्थः — वर्तमान काले केटलाक लिंगी निह्नो हंमेशा दोरावडे मुहपत्ति मोढे बांधी राखे छे, ते जिनाज्ञानुसारी छे के विरुद्ध ?

उत्तरः—आ वात जिनाज्ञाविरुद्ध जणाय छे, कोईपण सूत्रमां आवी विधि कहेल नथी. वळी शास्त्रमां ज्यां ज्यां मुह्पत्तिनो अधिकार छे, त्यां त्यां कोईपण ठेकाणे दोरानुं नाम पण नथी. तेमज पूज्यश्री सुधर्मास्वामीथी आरंभीने अविच्छित्र गृद्ध परंपराए कोईपण धर्मगच्छमां दोराथी मुह्पत्ति बांधवानुं विधान पण देखातुं नथी, माटे दोराथी मुहपत्ति बांधवी आ वात जिनागम अने आचरणाथी विरुद्धज छे. बीजुं गणधर महाराजे पण यथाअवसरे मोढे मुहपत्ति बांधी हती, पण हंमेशाने माटे तेओ मुख पर मुहपत्ति बांधता नहि. जो हंमेशा बांधी राखता होय तो विपाकसूत्रनो पाठ असंगत धई जात. मोढे मुहपत्ति बांधवाने माटे परम्पराथी आवेल विधा प्रमाणे साधुए बन्ने कान विधाववा जोईए. ते माटे

गीतार्थपरम्परा [५]

उपाध्याय श्री धर्मस्रागरजीए पोतानी रचेळ प्रवचन परीक्षामां विधान करेळ छे. ते पाठ नीचे प्रमाणे छे−

साधुवेष-कटिद्वरकनिवद्धपरिहितचोलपृहको रजो-हरणमुखबिक्षकासमन्वितः पाद्यतकलपकस्कन्धोपरि कृतौणिको गृद्दीतवामकरदण्डकः परम्पराऽऽयातिविधिविद्धो-भयकर्णकद्म पुरुषः साधुवेषधारी भण्यते, तस्य यो वेषः सः संपूर्णी वेषो भवति ॥

अर्थ:—जे पुरुष कम्मरमां दोरो बांधवापूर्वक चोल पट्टो पहेरेड होय. रजोहरण एटले ओवो अने मुखबिक्षका युक्त होय, कपडा पहेरी डावा खभा उपर कामल नाखी, डावा हाथमां दंड धारण करेल, परम्पराथी आवेल विधि पूर्वक बन्ने कान विंधावेल होय, आवो पुरुष साधुवेषधारी कहेवाय छे. ते पुरुषनो जे वेष ते संपूर्ण साधुवेष कहेवाय छे.

श्रा उपरथी समजवानुं के मोढे मुह्पत्ति बांधवा माटे साधुने कान विंधाववा पडे छे, कान विंधायेखा न होय तो संपूर्ण साधुवेष गणाय निह, प्रवचनपरिक्षा बीजो भाग. ८ विश्राम, पत्र २५ मां जणाव्युं छे साधुने मुह्पत्ति वे प्रकारनी होय छे.

चउरंगुल विहत्थी एयं मुहणंतगस्स उ पमाणं । बीओ विञ आएसो मुहप्पमाणेण निष्फन्नं ॥ १॥

**मुह्**पत्तिबन्धन

संपाइमरयरेणु पमज्जणहा वयंति मुहपोति । नासं मुहं च बन्धइ, तीए वसहिं पमज्जंतो ॥ २॥

भावार्थ: हाथमां राखदानी मुह्पत्तिनुं प्रमाण अक वेंत अने चार अंगुरुनुं छे, मोढे बांधवानी बीजी मुह्पत्तिनुं प्रमाण मुख प्रमाणे होय छे. संपातिम एटले ऊडता जीवो अने रज मुखमां न पडे ते माटे वस्नतिनुं प्रमार्जन करतां साधु मोढे मुह्पत्ति बांधे छे.

चपदेशप्रासाद स्थंभमां श्री विजयस्भिमित्र महाराज मोढानां श्रृंकथी उच्छिष्ट थयेल मुहपत्तिने पुस्तक के स्थापना-गुह्मथी जुदी राखवानुं जणावे छे. ते पाठ नीचे प्रमाणे छे-

मुखनिष्ठ्युतादिभिरूच्छिष्टा विश्वका पुस्तकैः सह स्थापना-गुरूणा च साकं न रक्षणीया, किन्तु भिन्नैव धार्या ॥

धर्मदेशना समये मोढे मुद्दपत्ति बांधवाना मुख्य बे कारणो छे. पहेलुं कारण ए छे के-ऊडता त्रसजीवो अने वायुकायनुं रक्षण करवानुं अने बीजुं कारण पुस्तक उपर थूंक लागवाथी श्रुतज्ञाननी आशातना थाय ते दूर करवानुं छे. व्याख्यान वखते मुद्दपत्ति हाथमां राखवाथी हाथ मुख आगळ स्थिर रहेतो नथी. ऊँचोनीचो थई जाय तेथी वायुकायनी विराधना थाय अने थूंक लागवाथी श्रुतज्ञाननी आशातना थाय, मुद्दपत्तिनो उपयोग गमे तेटलो राखवामां आवे तो पण बोलती वखते थूंक लाग्या वगर रहेतुं नथी, तेथी पूर्वाचार्यो गणधर महाराजनी परंपराने अनुसारे व्याख्यान समये मुद्दपत्ति बांधतां हतां. आ प्रथा सर्व गच्छमां हती.

शिथिलाचारी यतिवर्गे पण आ प्रथानो त्याग कर्यो न हतो. विक्रम संवत १९१२ सुधी आ प्रवृत्ति अविच्छिन्नपणे चालती हती. पछी पू. श्रीबुटेरायजी महाराज स्थानकवासी संप्रदायमांधी संवेगी मार्गमां आव्या त्यारे तेमणे आ : वृत्तिमां भेद कर्यो, एटले हाथमां मुहपत्ति राखीने व्याख्यान बांचतां थया. पू० श्री आत्मारामजी महाराज संबेगी मार्गमां आव्या त्यारे मुहपत्ति सम्बन्धी पू. पं. रत्नविजयजी गणि साथे चर्चा थतां तेमणे कह्युं हतुं के—परंपराथी व्याख्यान समये मुहपत्ति बांचवी जोईए, ए वात सत्य छे, परन्तु स्थानकवासी पणामां में आनुं खंडन क्यु छे देथी हुं अहिं बांधुं अने त्यां न बांधु तो मारं अप्रमाणिकपणुं ठरे, तेथी हुं बांधी शकतो नथीं आ उपरयी समजवानुं के व्याख्यानसमये मुहपत्ति बांधवानी प्रवृत्ति परंम्परासिद्ध छे. परपराना लक्षण माटे जुओ चैत्यवंदन महाभाष्यनो पाठ—

अनायमूळा हिंसारहिया सुझाणजणिण य । सूरिपरंपरपत्ता सुतव्व पमाणमायरणा ॥ २५ ॥ शान्ति. चै. म. भा-

क्षर्थ — जे प्रवृत्तिनुं मूल अज्ञात होय एटले आ प्रवृत्ति कोणे चालु करी ए खबर न होय, वळी हिंसा रहित होय, शुभध्यानने चत्पन्न करनारी अने आचार्योंनी परंपराची आवेळ होय ते आचरणा एटले प्रवृत्ति सूत्रसमान गणाय.

साधुओ व्याख्यानसमये मुह्पति बांघे छे अने भणती वखते केम बांधता नथी ? एना खुलासामां जणाववानुं

[८] मुद्दपत्तवन्थन

के-व्याख्यान योगमुद्रा अथवा प्रवचनमुद्राए आपवानु छे. वळी अर्थनी देशना आपनार आचार्य तीर्थंकर तुल्य गणाय छे. ते माटे व्यवहारभाष्यनो नीचेनो पाठ स्नाक्षीरूप छे.

> कइंतो गोयमो अत्थं मोचु तीत्थगरं सयं । निव उद्वर्ड अन्नस्स तगायं चेव गम्मति ॥ गाथा-२०२, व्यव० ६ चहेसो.

टीका—न खलु भगवान् गौतमो अर्थे कथयन् स्वकमात्मीयं तीर्थकरं मुक्त्वा अन्यस्य कस्यापि उत्तिष्ठति, अभ्युत्थानं कृतवान, तद्गतं चेदानीं सर्वैरिप गम्यते। तद्जुष्ठितं सर्वमिदानीमजुष्ठीयते। ततोऽर्थे कथयन् न कस्याप्युत्तिष्ठति॥

अर्थः - अर्थनुं व्याख्यान करनार भगवान श्री गौतमस्त्रामी पोताना तीर्थंकरने मूकीने बीजा कोई वडीळ आवे तो उठता नथी, तेम आसनवडे सत्कार पण करता नथी, तेम नुं अनुकरण करीने वर्तमानकाळे अर्थनुं व्याख्यान करता कोई उभा थता नथी, फक्त पोताना गुरु आवे तो जरुर उभा थवुं जोईए. आ उपरथी समजवानुं के – व्याख्यान आपनार मुनि तीर्थंकर स्थानीय छे. वळी व्याख्यान योगमुद्रा अथवा प्रवचनमुद्राए आपवानुं छे योगमुद्रा एटळे छे बे कोणी पेट उपर राखीने बे हाथ जोडवा ते योगमुद्रा कहेवाय. अने आचारितनकरमां प्रवचनमुद्राए धर्मदेशना आपवानुं कहुं छे. प्रवचनमुद्रा एटळे के जमणा हाथना अंगूठानी साथे तर्जनी आंगळी जोडीने बाकीनी आंगळीओ विस्तारवी ते प्रवचनमुद्रा कहेवाय.

योगमुद्रामां मुख्यी हाथ छेटे ज रहे छे अने प्रवचन-मुद्रामां तो एक हाथमां पानां अने बीजा हाथमां प्रवचनसुद्रा ज होय छे. एटळे मुहपत्तिनी उपयोग रही शकतोज नथी, तेथी व्याख्यान समये मोढे मुहपत्ति बांधवानी जरुर रहे छे. न बांघे तो संपातिम जीवो तथा वायुकायनी विराधना थाय, श्रोताओ उपर थूंक उडे तेमज श्रुतज्ञाननी आशातना थाय छे तेथी पूर्वाचार्यनी परंपराने अनुसारे व्याख्यान समये मोदे मुद्दपत्ति बांधवामां आवे छे. व्याख्यान सिवाय बीजा समये योगमुद्राए के प्रवचनमुद्राए शास्त्र वांचवानुं नथी. तेथी मुहपत्ति हाथमां राखीने वांचवामां आवे छे अने व्याख्यान सिवायना वखतमां भणतां के वांचतां साधुने शास्त्रकारे तीर्थंकर स्थानीय कहेला नथी, तेथी ते वखते मुहपत्ति बांधवानुं कंई प्रयोजन नथी, एटले ते समये मुहपत्ति हाथमां रखाय छे. श्री शीलांकाचार्यकृत ''विधिप्रपा" अन्थमां देशनाधिकारमां मोढे मुहपत्ति बांधवानो स्पष्ट उल्ढेख मळे छे. आ रह्यो ते पाठ-

इच्छाकारेण तुब्भे अम्हं धम्मोवएस दिएह, तओ गुरु आसणोविवद्वो सुहपावरणधरो दाहिणपासिष्टियरयहरणो पउमासणपलहिद्यासिणओ वा भयवं कण्णमूलकयनासम्ग-नि वेसियहत्थागो जोगमुदाए पुल्ड्यनयणो सुमहुरसरेण सन्वजाणवयवोहगामिणीए भयवत्तीए देसणं कुणइ।

भावार्थ :- हे भगवन् ! ईच्छापूर्वक आप अमने धर्मीपदेश आपो. त्यारपछी गुरु शुभ वस्त्र धारण करी, आसन उपर वेसी, रजोहरण जमणे पडखे राखी, पद्मासन वासी, कानना

**मुह्**यत्तिबन्धन

मूलथी नासिकाना अग्रभाग उरर मुहपत्ति राखी, हाथमां योग-मुद्रा धारण करी, विकसित नेत्रे, मधुर स्वरे, सर्व लोकने बोच करवा माटे धर्मदेशना आपे. आ पाठमा ग्रंथकारे धर्म-देशना आपवानी विधिनुं विधान स्पष्ट रीते दर्शावेल छे, एमां अंशमात्र संशय करवानी जरुर नथी. विचाररत्नाकरना एक श्लोकमां पण मुहपतिवंधननो स्पष्ट उल्लेख छे.

कण्ठे सारसरस्वती हृदि कृपानीतिक्षमाशुद्धयो, वक्त्राब्जे मुखबिक्का सुभगता काये करे पुस्तिका। भूपालप्रगतिः पदे दिशि दिशि श्लाघाऽभितः संपदा, इस्थं भूरिवधृतृतोऽपि विदितो यो ब्रह्मचारीश्वरः॥१॥

अर्थ:—जेनां कण्ठमां सरस्त्रती छे, हृद्यमां द्या, नीति, क्षमा अने शुद्धि छे, शरीरमां सुभगता छे, मुख उपर मुख-विश्वका धारण करी छे, हाथमां पुस्तक छे, पगमां राजओ पणिति—नमस्कार करे छे, दिशे दिशामां प्रसंशा फेळायेळी छे, चारे बाजु संपदा फरी वळी छे—एवी रीते घणी खीओथी परिवरेळ छतां जे ब्रह्मचारी तरीके प्रसिद्ध छे. आ श्लोकमां कविए आचार्यनी ज्याख्यान विषयिक स्थितिनुं वर्णन आप्यं छे.

हरिबल्लमच्छिना रासमां पण धर्मदेशना समये मोढे मुह्पत्ति बांधवानी वात आवे छे.

बीजे दिने रिव उगियो, प्रगटचो राग विभास । ककुभाए बाह पसारीया, कैरव कीध प्रकाश ॥१॥ मीतार्थपरम्परा

देउल सघले वाजीया, झालरना रणकार । तास शब्द सुणतां थका, रजनी नाठी तिवार ॥२॥ सुलभबोधी जीवडा, मांडे निज खटकर्म । साधुजन सुल सुहपत्ति, बांधी कहे जिनधर्म ॥३॥

जगद्गुरु श्री हीरसूरि महाराज पण व्याख्यानमां मुहपत्ति बांबता हता. आ वात किव ऋषभदासकृत ' हीर-सूरिरास 'मां स्पष्ट छे.

हिवबलो एक पश्च पूछतो, 'कपडा' क्युं बंधेई ? थूंक किताव उपर जई लागे, तेणे बांध्या है एही ॥२१॥ हिबबलो फीर एम पूछतो, थूंक पाक नापाक ? हीर कहे मुखमां तव पाको, नीकले ताम नापाकी ॥२२॥

श्री हीरसूरि महाराज खंभातमां हता त्यारे खंभातनो सूबो हिबबे वे व्याख्यानमां गये छो. तेणे पूछ्युं. के —तमे मोढा उपर कपडुं के म बांध्युं छे १ आचार्य महाराजे जणाव्युं के — बोळतां थूंक पुस्तक उपर न छागे तेथी कपडुं बांध्युं छे. हिबबे छे फरी पूछ्युं के थूंक पाक के नापाक १ त्यारे हीरसूरि महाराज कहे छे के थूंक मोढामां होय त्यां सुधी पाक —पवित्र छे. बहार निकल्या पछी नापाक—अपित्र गणाय. अहिं हिबबे छाना प्रभना जवाबमां पुस्तक उपर थूंक न छागे ए सिवाय मुहपित बांधवानुं बीजुं कोई कारण जणाव्युं नथी. पुस्तक उपर थूंक छागवाथी श्रुतज्ञाननी आशातना थाय छे. ५ श्रुतज्ञान १ ए ज्ञाननो भेद छे अने ज्ञान ए मोक्षनुं अंग छे,

[१२] गुहपत्तिबन्धक

पनी आशातना तरफ उपेक्षा सेववामां आवे तो मोक्षमार्गनुं आराधकपणुं रहेतुं नथी, तेथी श्रुतज्ञाननी आशातनानुं फळ दर्शावतां शास्त्रकार कहे छे के-

तित्थयरं-पवयण-सुयं-आयरियं-गणहरं-महडिदं ।
आसायंतो बहुसो, अणंतसंसारिओ होइ ॥२१॥
कुर्वन्नाशातनामईद्वाचां, सत्यसुधासुचाम् ।
प्राप्तुयादधिकं पापमाचार्यादेर्वधादिष ॥२२॥
महामोहतमोऽन्धानां, अमतां भवन्तमिति ।
श्रीजिनागमदीषोऽयं, मकाशं कुरुतेऽङ्गिनाम् ॥२३॥
अन्धयारे दुरुतारे, घोरे संसारसागरे ।
एसो चेव महादीवो, लोयालोयिनिलोयणी ॥१॥
एसो नाहो आणाहाणं, सन्वभूआणं भावओ ।
मावबन्ध् इमो चेव, सन्वसुक्त्वाण कारणम् ॥२॥

अर्थ:-तीर्थंकर, प्रवचन, श्रुतज्ञान, आचार्य, गणधर, महर्द्धिक देव अंओनी घणी वार आशातना करनार जीव अनंतसंसारी थाय छे, महामोहरूप अंधकारथी अन्ध बनेला अने संसारमार्गने विषे परिश्रमण करतां एवा जीवोने जिनेश्वर देवना आगम दीपकनी माफक प्रकाश आपे छे. जेने माटे कहुं छे के-दुरुत्तार, भयानक अने अंधकारमय संसारसमुद्रने विषे लोक अने अळोकना भाव जणावनार आ जिनागमज महादीपक छे, जिनागम अनाथोनो नाथ छे, सर्व प्राणीओनो भावबन्धु छे अने सर्वसुखनुं कारण छे. आ पंचम कालमां

नीतार्थपरम्परा [१३

जिनागम अने जिनप्रतिमाज संसार समुद्र तरवाना साधन छे. ए वेमां जिनागम चडीयातुं छे. जिनवाणीतुं महत्त्व समजावतां शास्त्रकार कहे छे हे-

संप्रत्यस्ति न केवली किन्युगे त्रैन्नोक्यरक्षामणिः । तद्वाचः परमाक्ष्यरन्ति भरतक्षेत्रे जगद्घोतिका ॥ सद्रत्नत्रयथारिणो यतिवराः तासां समान्रम्बनम् । तत्पूज्या जिनवाक्यपूजनतया साक्षाज्जिनः पूजितः ॥१॥

अर्थः - वर्तमानकाले किलयुगमां त्रण लोकनी रक्षा करवामां समर्थ एवा केवलिभगवान तो नथी, पण जगतमां प्रकाश करनारी तेमनी वाणी भरतक्षेत्रमां विस्तरे छे. अने - ज्ञान - दर्शन - चारित्रहणी रत्नत्रथीने धारण करनारा उत्तम मुनिओने पण केवली भगवाननी वाणीनुंज आलंबन छे, माटे मुनिओने पृष्य एवी जिनवाणीनो आदरसत्कार करवाथी स्नाक्षात् जिनेश्वरदेवनी पूजानो लाभ मळे छे. आ उपरथी समजाय छे के जिनप्रतिमा करतां जिनेश्वरदेवना मुखमांथी निकळेल वाणी बघु चित्रयती छे. हवे विचारवानुं ए रहे छे के - जिनप्रतिमानी पूजा करती वस्तते मुखनुं थूंक के श्वास जिनप्रतिमाने न स्नामें अटला माटे श्रावकने अष्टपड़ी मुखकोश बांधवानुं शास्त्रकार कहे छे. पूजा तो मौनपणे पण थई शके छतां मुखकोश वांधवा पडे छे. वळी गुहनी सेवा करती वस्तते पण श्रावकने 'आचारोपदेश'मां वस्त्रथी मुख ढांकवानुं कहुं छे: -

वस्तावृतमुखो मौनी इरन् सर्वोङ्गजं श्रमम् ॥ गुरुं संवादयेद्यतना-त्पाद्स्यर्शे त्यजन् निजम् ॥१०॥ [48]

क्षर्थः-श्रावक, गुरुना शरीरने पोताना मुखनुं शृंकके श्वास न छागे ते माटे वस्त्रथी मुख ढांकी, मौन राखी, शरीरना थाकने इरतो अने यत्नथी पोताना पगना स्पर्शने तजतो गुरुनी सेवा करे.

साधुने पण वसतीनुं प्रमार्जन करती वस्तते शास्त्रकारे मुद्दगति बांघवानुं कह्युं छे, तो पछी धर्मदेशना मोढे मुद्दपति बांध्या विना केम अपाय १ श्रुतज्ञाननी आशातना दूर करवाने अने जीवदयाने माटेज पूर्वाचार्यों धर्मदेशना समये मोढे सुद्दगति बांधतां हता अने बांधवी जोईओ.

धर्मशास्त्र वांचती वस्तते मोढे मुहपति के कपडुं बांधवानो रिकाज जैन अने जैनेतर धर्ममां हतो अम पंडित श्री मुखलालजी पण पोतानी सन्मतितर्कनी गुजराती प्रस्तावनामां छखे छे-

जैन साधुओमां केटलाकनो अवो रिवाज छे के मात्र समामां व्याख्यान करती वखते मोढे मुहपति बांधवी.

मंत्रोच्चार करती वखते पारसी अध्वर्युमां मोढे कपडुं बांधवानी प्रथानं, सांख्य परीत्राजकोमां मोढा आगळ छाकडानी पट्टी राखवानी प्रथानं अने स्वामिनारायण संप्रदायनी शरुआतमां बांचती वखते मुखवस्व राखवानी प्रथानं मूळ एकज छागे छे के विद्यार्थी के श्रोता उपर व्याख्याता के वक्तानं थूंक न पडे. तेषां च महाभारते-बीटेतिख्याता दारवी मुखवस्विका मुखनिश्वास निरोधिका भूतानां द्या निमित्तं भवति यदाहुस्ते-घाणादितोऽनुयातेन श्वासेनेकेन जन्तवः ॥ इन्यते शतशो ब्रह्मकणुमात्राक्षरवादिनाम् ॥१॥

भावार्थ-तेओना महाभारतने विषे बीटा ए नामधी

गीतार्थपरम्बरा [१५]

प्रसिद्ध लाकडानी मुख विश्वका कहेली छे, जे मुखना श्वासनी रोघ करनारी जीवोनी दया निमिते होय छे, जेने माटे तेओ कहें छे के, हे ब्रह्मन् अणु मात्र एटलो अक्षर बोलनारना नाकमांथी नीकळेल एक श्वासवडे सेकडो जीवो हणाय छे, एटले जीवदया निमिते तेओ मुहपत्ति राखे छे, आ वात बहुदर्शन समुच्चयमां गुणरत्नसूरिए लखेल छे षड्दर्शन टीका पत्र ३८॥

इ. स. पूर्वे चोथा सैकामां भारत पर चडी आवेळ बादशाह सिकंदरनो सेनापित निआर्केस पोताना युद्धवृत्तान्तमां ढखे छे के 'भारतवासी लोको हुने कूटी कूटीने कागळ बनावतां.' आ चपरथी आपणे त्यां कागळ बनाववानो प्रयोग पण घणो प्राचीन जणाय छे.

प्राचीन मंडारोमां चोथा अने पांचमां सैकानी छखेळी प्रतो मळी शके छे एटले साधुओने ताडपत्रनी प्रता लईने व्याख्यान वांचवुं पहतुं हतुं अने तेने लीधे मुहपत्ति बांधता हता-आ वात तो पाया वगरनी लागे छे; कारण के आपणा देशमां कागळ बनाववानो उद्योग तो इस्वीसन पहेलांथी चालु छे एटले व्याख्यानने लायक कागळ उपर लखेळी प्रतो नहोती अने ताडपत्रनी प्रतो वे हाथे पकडीने व्याख्यान बांचवुं पडतुं हतु एटलेज मुहपत्ति बांधवानुं प्रयोजन हतुं ए कथन निराधार ठरे छे. व्याख्यान योगमुद्रा के प्रज्ञचनमुद्रार आप-वानुं छे तेथी वे हाथे पाना पकडीने व्याख्यान वांचवानीः वात रहेतीज नथी. ृ[१६] मुहपत्तिबन्धन

मुह्पत्ति चर्चाने परिणामे परम्पराथी व्याख्यान समये मोढे मुह्पत्ति बांधवानी वात सिद्ध थई त्यारे प्. श्रो बुटे-रायजी महाराज श्रीना शिष्य पू श्री नीतिविजयजो महाराजे कहुं के-आपश्री स्थानकवासी संप्रदायमांथी आव्या छो तेथी आप मुद्धपत्ति न बांधो, परन्तु हुं तो स्थानकवासी संप्रदायमांथी आवेळ नथी तो आपश्री जो आज्ञा आपो तो हुं मुद्धपत्ति बांधुं पष्टी पू. श्री बुटेरायजी महाराजश्रीनी आज्ञाथी पूज्य महाराजश्री नीतिविजयजी महाराज व्याख्यानसमये मोढे मुद्धपत्ति बांधता हता. तेमना शिष्य पू. श्री सिद्धिविजयजी मर पू. श्री हरखविजयजी मर अने मुनिराजश्री दीपविजयजी मर पण मुद्धपत्ति बांधता हता एम संभळाय छे. एटछे गुरुए न बांधी तेथी शिष्यो पण न बांधे तेवो कोई नियम नथी.

आ दूंका निबन्धनो सारांश ए छे के-साधु-मुनिराजे व्याख्यान वांचती वखते मुद्दपत्ति मुख पर बांधीने कानना किंद्रमां भराववी ए गीतार्थ परम्परागत आवरणा ज छे.

व्याख्यानमां मोढे मुह्पत्ति बांधवा विषे आचार्यश्री विजयानंदसूरि-आत्मरामजी महाराज तरफथी सुरत सुनिश्री आछमचंदजी महाराज उपर छलाएछ पत्रनी अक्षरशः नकछ नीचे आपवामां आवे छे.

मु. सुरत बंदर.

मुनिश्री आलम बन्द्जी योग्य ढि० आचार्य महाराज श्री श्री श्रो १००८ श्रीमद् विजयानंदसूरीश्वरजी (आत्मारामजी) महाराजजी आदि साधुमंडल ठाने ७ के तर्फसे वंद्णानुवंद्णा १००८ बार वांचनी. चिट्री तुमारी आइ समंचार सर्व जाणे है यहां सर्व साधु सुखसातामें हैं तुमारी सुखसाताका समंचार छिखना. मुहपत्ति विशे हमारा कहना इतना हि है कि मुहपत्ति वन्धनी अच्छी है और घणे दिनोंसे परंपरा चली आइ है इनको लोपना यह अच्छा नहीं हैं, हम बंधनी अच्छी जाणते है परन्त हम दुंढी अं लोकमेंसे मुहपत्ति तोडके नीक है है इस वास्ते हम बंध नहीं सकते हैं और जो कदी बंधनी इच्छोओ तो वहां बडी निन्दा होती है और सत्य धर्ममें आये हुआ छोकों के मनमें ही छचली हो जावे इस वास्ते नहीं बंध सकते है सो जाणना अपरंच हमारी सलाह मानते हो तो तुमको मुहपत्ति बंधनेमें कुच्छ भी हानी नहीं हैं क्योंकि तुमारे गुरु बंधते है और तुम नहीं बंधो यह अच्छी बात नहीं है. आगे जैसी तुमारी मरजी. इमने तो हमारा अभिप्राय छिख सीया है सो जाणना और इमकों तो तुम बांधो तो भी वैसा हो और नहीं बांघा ता भी वैसे ही है। परन्तु तुमारे हितके वास्ते ढिखा है, आगे जैसी तुमारी मरजी. १९४७ कत्तक विद ०)) वार बुध दस्रखत वल्लभविजय की वंदना वांचनी. दीवाली के राज दश बजे चिट्ठी लिखी है.

१ नोट—स्वर्गस्थ-आचार्यश्रो विजयत्रलभस्रि महाराज ।

## तारुं तुं संभाळ

कार्य च कि ते पर दोषदृष्ट्या कार्य च कि ते परचिन्तया च वृथा कथं खिद्यसि बालबुद्धे कुरु स्वकार्ये त्यजसर्वमन्यत्

हे चेतन ! पारका दोषो जोवानुं तारे शुं मयोजन छे? तेम पारकी चिन्ता करवानुं पण तारे शुं काम छे? हे मंदबुद्धि ? नाहकमां शा माटे दुःखी थाय छे? सर्व छोडी तुं तारुं संभाळ.

सुरक: मणिलाल छगनलाल शाह नवप्रभात प्रिन्टिंग प्रेस, घीकांटा रोड, अहमदाबाद.



शीलादिगुणयुग् जितेन्द्रियवरी रागादि - दोषान्तकृत्। पीयूषामभिसद्गिरा भ्रवि सदा सद्धर्म-सद्देशकः॥ शास्त्रेष्वक्षतधीर्गणी गुरुसमः संविग्न-शास्त्राग्रणीः। पन्न्यास-प्रवरोऽत्र भावविजयो जीयात् तपागच्छराट् ॥१॥

अज्ञानानि घनान्धकार-पटलं ज्ञानांशुभिनिर्दमन् । पापात्माविल सत्क सत्कुमुदिनी संकोचमापादयन् ॥ तेजः-पुंजसितोंकृत क्षितितलो यः सर्वदा द्योतते । वन्देऽहं तमहस्तरं बुधनतं श्री नीतिस्ररीधरम् ॥ २ ॥

बारये येन कलाऽरिषट्क विजये आसाध दीक्षां ग्रुरोः। पार्श्वे सुरिविभूषणस्य वसता शास्त्रान्धिरुत्कंपितः। नीतेः पद्दविभूषकोज्ज्वलकर-सुरीशः च्डामणिः। सोऽयं ज्ञानतपो निधि विजयतां श्रीहर्ष सुरीक्षरः॥ ३॥